

वर्ष : 36
अंक : 116

नई दिल्ली
मंगलवार, 03 सितम्बर 2024

Email : dailyamritindia@gmail.com / amritindia_2006@rediffmail.com



दिल्ली, एनसीआर से प्रकाशित

RNI No. 49267/89

मूल्य : 1.00 रूपया

पृष्ठ : 08

एक नजर...

भाजपा ने जम्मू-कश्मीर विधानसभा चुनाव के लिए चौथी सूची जारी की

नई दिल्ली। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने जम्मू-कश्मीर विधानसभा चुनाव के लिए सोमवार को चौथी सूची में छह उम्मीदवार के नाम घोषित किए। पार्टी के महासचिव अरुण सिंह यहां एक विज्ञापित में बताया कि पार्टी की केंद्रीय चुनाव समिति ने इन नामों को स्वीकृति दी है। भाजपा ने श्रीनगर की लाल चौक विधानसभा सीट से इंजीनियर ऐजाज हुसैन, ईदगाह से आरिफ रजा, खानसाहिब से डॉ अली मोहम्मद मीर, चमरे शरीफ से जाहिर हुसैन को टिकट दिया है। भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष रविन्दर रेना को नौशेरा से तथा राजौरी (सु) से विवेक गुप्ता को उतारा गया है।

मुंबई में कार के टैकर से टकरा जाने से तीन लोगों की मौत

मुंबई। मुंबई के चेंबर इलाके में रविवार एक कार के पलट जाने और इंसक पर खड़े पानी के टैकर से टकरा जाने से कम से कम तीन लोगों की मौत हो गई और कई अन्य घायल हो गए। पुलिस ने यह जानकारी दी। एक अधिकारी ने बताया कि यह हादसा दोपहर में हुआ। उन्होंने बताया कि कार के चालक ने वाहन पर से अपना निशान खो दिया, जिससे वाहन पलट गया। अधिकारी ने बताया कि मृतक और घायल व्यक्ति मित्र थे। उन्होंने बताया कि मृतकों की पहचान हरिवंश दिलीप दास (23), उमेश शंकर प्रसाद (35) और रुद्रान शेख (40) के रूप में हुई है।

पूर्व क्रिकेटर कीर्ति आजाद की पत्नी पूनम का निधन

नई दिल्ली। पूर्व भारतीय क्रिकेटर एवं तुलसी कानोस (टीएमसी) सांसद कीर्ति आजाद की पत्नी पूनम आजाद का सोमवार को निधन हो गया। वह पिछले कई वर्षों से गंभीर रूप से बीमार थीं। श्री आजाद ने यह जानकारी आज सीशल मीडिया ग्रुप एक्स पर दी। उन्होंने पोस्ट में लिखा कि उनकी पत्नी पूनम अब नहीं रही। आज दोपहर 12:40 बजे उनका निधन हो गया। आप सभी को संवेदना देने के लिए धन्यवाद। दामोदर घाटी स्मथान घाट पर शाम चार बजे उनका अंतिम संस्कार किया जाएगा। उन्हें दुर्गापुर में यह जगह बहुत पसंद थी। श्रीमती आजाद ने लोकसभा चुनाव में भी के साथ कई बार विलेजियर पर बैटकर प्रचार अभियान में भाग लिया था।

राजनीति योगी विपक्ष दो अंतिम मुरादाबा

लखनऊ। योगी ने कहा कि 2017 के पहले जब उत्तर प्रदेश में सरकारी नौकरी निकलती थी तो चाचा-भतीजा की जोड़ी वसूली पर निरूपण थी। चाचा-भतीजा की जोड़ी ऐसा खुराफात करती थी कि न्यायालय को नौकरी पर रोक लगानी पड़ती थी। सरकारी नौकरी चाचा भतीजा की वसूली की भेट चढ़ जाती थी। युवा बेरोजगार हो जाते थे और उन्हें नौकरी के लिए देना के अन्ध राखी में पलायन करने को मजबूर होना पड़ता था। उन्होंने कहा कि आज उत्तर प्रदेश में कामना व्यवस्था सुदृढ़ हुई है। उल्लेख इन सरकार की भ्रष्टाचार और अपराध के खिलाफ जीटी टीएलएस को नीति का परिणाम है कि देश में उत्तर प्रदेश का सम्मान बढ़ा है।

राजधानी में हुई झमाझम बारिश, सड़कों पर भरा पानी

नई दिल्ली। देश की राजधानी दिल्ली में सोमवार को भारी बारिश हुई। इससे कई जगहों पर पानी भर गया और पेड़ उखड़ गए। दिल्ली पुलिस ने सोमवार को बारिश के बाद कई स्थानों पर जलमय और पेड़ उखड़ने के कारण यातायात जाम होने के बाद यात्रियों से व्यवस्थित रूप से अपनी यात्रा की योजना सावधानीपूर्वक बनाने को कहा है। राष्ट्रीय राजधानी के कई इलाकों में सुबह बारिश हुई। पुलिस ने सीशल मीडिया ग्रुप एक्स पर एक पोस्ट में कहा कि जलमय के कारण राष्ट्रीय राजमार्ग-48 के धौला कुआं से महापालपुर की ओर और इसके दूसरे ओर के मार्ग पर यातायात प्रभावित हुआ है।

मौसम		
	Max	Min
चेन्नई	36	27
दिल्ली	32	26
जयपुर	31	25
मुंबई	28	26

निर्भय-निष्पक्ष-निरन्तर

अमृत इंडिया

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

पीएम मोदी ने भाजपा के सदस्यता अभियान की शुरुआत की, मोदी बने पहले सदस्य

हम सत्ताधारियों का जुल्म सहकर यहां तक पहुंचे हैं : प्रधानमंत्री मोदी

नई दिल्ली/एजेंसी।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सोमवार को दिल्ली में बीजेपी मुख्यालय में भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) के राष्ट्रीय सदस्यता अभियान-संगठन पर्व, सदस्यता अभियान 2024 की शुरुआत की। पार्टी के कार्यक्रम में बीजेपी अध्यक्ष जेपी नड्डा, गृह मंत्री अमित शाह और अन्य शीर्ष नेता शामिल हुए। इस दौरान प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि आज सदस्यता अभियान का एक और दौर प्रारंभ हो रहा है। भारतीय जनसंघ से अब तक हमने देश में एक नई राजनीतिक संस्कृति लाने का भरसक प्रयास किया है... अगर किसी दल में आंतरिक लोकतंत्र निरंतर नहीं पनपता तो वैसी स्थिति बनती है जो आज हम देश के कई दलों की देख रहे हैं। मोदी ने कहा कि आज सदस्यता अभियान का एक और दौर प्रारंभ हो रहा है। भारतीय जनसंघ से लेकर अब तक हमने देश में एक नई राजनीतिक संस्कृति लाने का भरसक प्रयास किया है। जब तक जिस संगठन के माध्यम से या जिस राजनीतिक दल के माध्यम से देश की जनता सत्ता सुपुर्द करती है, वो ईकाई, जो संगठन और वो लक्ष्य और लोकतांत्रिक मूल्यों को नहीं जीता है, आंतरिक लोकतंत्र निरंतर उसमें पनपता नहीं है तो वैसी स्थिति बनती है जो आज देश कई दलों को हम देख रहे हैं। उन्होंने कहा कि भाजपा एक मात्र दल है। जो अपनी पार्टी के संविधान के अनुसार अक्षर-लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं का पालन करते हुए अपने कार्य का विस्तार कर रहा है और जन-सामान्य को आशा, आकांक्षाओं पर खरा उत्तरने के लिए अपने आप को निरंतर योग्य बनाते रहता है। प्रधानमंत्री ने कहा कि मैं जब राजनीति में नहीं था, तो जनसंघ के जमाने में बड़े उसका



हम वो लोग हैं जिन्होंने दीवारों पर कमल पेंट किया

भाजपा सदस्यता अभियान के शुभारंभ पर पीएम मोदी ने विपक्षी दलों पर निशाना साधते हुए कहा कि इस बात के उदाहरण हैं कि जब पार्टियां आंतरिक लोकतंत्र का पालन नहीं करती हैं तो क्या होता है, यह कई पार्टियों में देखा जा सकता है। प्रधानमंत्री ने कहा, आज सदस्यता अभियान का एक और दौर प्रारंभ हो रहा है। भारतीय जनसंघ से अब तक हमने देश में एक नई राजनीतिक संस्कृति लाने का भरसक प्रयास किया है... अगर किसी दल में आंतरिक लोकतंत्र निरंतर नहीं पनपता तो वैसी स्थिति

बनती है जो आज हम देश के कई दलों की देख रहे हैं। भाजपा के सदस्यता अभियान के शुभारंभ पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि जब भाजपा इस अभियान के माध्यम से खुद को और मजबूत करेगी तो विधानसभाओं और लोकसभा में महिलाओं के लिए 33 प्रतिशत आरक्षण लागू हो जाएगा। हर छह साल में आयोजित होने वाले भाजपा के सदस्यता अभियान के दौरान मौजूदा सदस्यता का नवीनीकरण किया जाता है और नए सदस्यों को इसमें शामिल किया जाता है।

के साथ कार्यकर्ता दीवारों पर दीपक पेंट करते थे तो कई राजनीतिक दल के नेता अपने भाषणों में मजाक उड़ते थे कि दीवारों पर दीपक पेंट करने से सत्ता के गलियारों तक नहीं पहुंचा जा सकता है। हम वो लोग हैं, जिन्होंने श्रद्धा

से दीवारों पर कमल पेंट किया, क्योंकि विश्वास था कि दीवारों पर पेंट किया कमल कभी न कभी तो दिलों पर भी पेंट हो जाएगा। उन्होंने कहा कि आज भी कुछ राज्यों में भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता उसी जीवन

मंत्रिमंडल की साणंद में नई सेमीकंडक्टर इकाई लगाने के केनेस सेमीकॉन प्रस्ताव को मंजूरी

नई दिल्ली/एजेंसी।

सरकार ने देश में जीवंत सेमीकंडक्टर पारिस्थितिकी तंत्र विकसित करने के उद्देश्य से भारत सेमीकंडक्टर मिशन (आईएसएम) के तहत गुजरात के साणंद में एक सेमीकंडक्टर इकाई स्थापित करने के लिए केनेस सेमीकॉन प्राइवेट लिमिटेड के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है। साणंद में सेमीकंडक्टर क्षेत्र के लिए स्वीकृत यह दूसरा प्रस्ताव है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में केंद्रीय औद्योगिक, ऑटोमोटिव, इलेक्ट्रिक वाहन, उपभोक्ता इलेक्ट्रॉनिक्स, दूरसंचार, मोबाइल फोन आदि जैसे क्षेत्र शामिल हैं। भारत में सेमीकंडक्टर और डिस्ट्रेले विनिर्माण इकाईयों के लिए अनुकूल पारिस्थितिकी तंत्र के विकास के लिए कार्यक्रम 21 दिसंबर 2021 को 76 हजार करोड़ रुपये के कुल



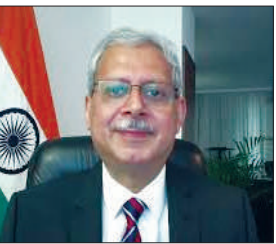
माइक्रो चिप होगी। इस इकाई में उत्पादित चिप विभिन्न प्रकार के अनुप्रयोगों को पूरा करेंगे, जिसमें औद्योगिक, ऑटोमोटिव, इलेक्ट्रिक वाहन, उपभोक्ता इलेक्ट्रॉनिक्स, दूरसंचार, मोबाइल फोन आदि जैसे क्षेत्र शामिल हैं। भारत में सेमीकंडक्टर और डिस्ट्रेले विनिर्माण इकाईयों के लिए अनुकूल पारिस्थितिकी तंत्र के विकास के लिए कार्यक्रम 21 दिसंबर 2021 को 76 हजार करोड़ रुपये के कुल

परिव्यय के साथ अधिसूचित किया गया था। इस क्रम में जून, 2023 में, केंद्रीय मंत्रिमंडल ने गुजरात के साणंद में एक सेमीकंडक्टर इकाई स्थापित करने के पहले प्रस्ताव को मंजूरी दी थी। इस वर्ष फरवरी में तीन और सेमीकंडक्टर इकाईयों को मंजूरी दी गई। टाटा इलेक्ट्रॉनिक्स गुजरात के धोलेरा में एक सेमीकंडक्टर फैब और असम के मोरीगांव में एक सेमीकंडक्टर इकाई स्थापित कर रही है।

भारत-सिंगापुर संबंध और प्रगाढ़ होने की ओर अग्रसर : विदेश मंत्रालय

नई दिल्ली/एजेंसी।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सिंगापुर यात्रा से पहले विदेश मंत्रालय ने सोमवार को कहा कि भारत-सिंगापुर मंत्रिस्तरीय गोल्डमेज सम्मेलन के तहत साझेदारी के लिए 'नए महत्वपूर्ण क्षेत्रों' पर आधारित, दोनों देशों के बीच संबंध और भी बढ़े स्तर पर पहुंचने वाले हैं। मोदी सिंगापुर के प्रधानमंत्री लीरेंस वोंग के आमंत्रण पर चार-पांच सितंबर को सिंगापुर की यात्रा पर जाएंगे। इससे पहले उनका तीन-चार सितंबर को बुनेई का दौरा करने का कार्यक्रम है, जिसका उद्देश्य सभी मौजूदा क्षेत्रों में द्विपक्षीय सहयोग को और मजबूत करना है। विदेश मंत्रालय के सचिव (पूर्व) जयदीप मजूमदार ने यहां प्रेस वार्ता में कहा कि भारत और बुनेई "रक्षा क्षेत्र में एक संयुक्त कार्य समूह" स्थापित



सिंगापुर ने प्रधानमंत्री मोदी के तीसरे कार्यकाल की शुरुआत में उनकी यात्रा का स्वागत किया है। उन्होंने कहा, "यह दौरा ऐसे समय में हो रहा है जब सिंगापुर में नए नेता ने सत्ता संभाली है और यह हमारे जीवंत द्विपक्षीय संबंधों के अगले चरण के लिए मंच तैयार करने का उपयुक्त समय है।"

पीएम मोदी ने मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी से की बात, तेलंगाना में बाढ़ की स्थिति की ली जानकारी

हैदराबाद/एजेंसी।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने तेलंगाना के मुख्यमंत्री ए रेवंत रेड्डी से बात की और उनसे राज्य में बाढ़ की स्थिति के बारे में जानकारी ली है। श्री मोदी ने फोन पर हुयुी बातचीत के दौरान श्री रेड्डी से राज्य के कई जिलों में भारी बारिश और बाढ़ से हुए नुकसान के बारे में जानकारी ली। श्री रेड्डी ने रविवार रात हुयुी बातचीत के दौरान प्रधानमंत्री को राज्य में भारी बारिश और बाढ़ से हुए नुकसान के बारे में जानकारी दी और राज्य सरकार द्वारा व्यवधान को कम करने और जानमाल की क्षति को रोकने के लिए किये गये तत्काल राहत उपायों और बरती गयीं सावधानियों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने श्री मोदी को बताया कि भारी बारिश और बाढ़ के



कारण सबसे ज्यादा नुकसान खम्मम जिले में हुआ है। वहीं, प्रधानमंत्री ने जनहानि को रोकने के लिए राज्य सरकार के सक्रिय उपायों की सराहना की। एक आधिकारिक बयान में रविवार देर रात कहा गया कि उन्होंने (श्री मोदी) श्री रेड्डी को यह भी आशवासन दिया कि केंद्र सरकार प्रतिकूल मौसम की स्थिति में राहत कार्यों में सहायता के लिए हेलिकॉप्टरों की तैनाती सहित अन्य

शंभू बॉर्डर आंदोलन

सुप्रीम कोर्ट ने किसानों के मुद्दे सुलझाने को उच्चस्तरीय समिति की गठित

नई दिल्ली/एजेंसी।

उच्चतम न्यायालय ने हरियाणा-पंजाब के शंभू बॉर्डर पर फरवरी से धरने पर बैठे किसानों की शिकायतों को सोहार्दपूर्ण ढंग से 'हमेशा के लिए' निपटाने की सोच के साथ उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश न्यायमूर्ति नवाब सिंह की अध्यक्षता में एक बहु-सदस्यीय उच्चस्तरीय समिति का सोमवार को गठन किया। न्यायमूर्ति सूर्य कांत एवं न्यायमूर्ति उज्जल भुइया की पीठ ने पंजाब और हरियाणा उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश न्यायमूर्ति सिंह की अध्यक्षता वाली इस समिति को कृषि उज्ज का न्यूनतम समर्थन मूल्य और अन्य मुद्दों पर किसानों की चिंताओं के मद्देनजर एक रुपयेका तैयार करने के लिए एक



सप्ताह के भीतर अपनी पहली बैठक आयोजित करने का निर्देश दिया। शीर्ष अदालत की ओर से गठित इस समिति में अन्य सदस्यों में हरियाणा के पूर्व पुलिस महानिदेशक पी एस संघु, कृषि विशेषज्ञ प्रोफेसर देवेन्द्र शर्मा और पंजाब कृषि विश्वविद्यालय के कृषि अर्थशास्त्री डॉ सुखपाल सिंह शामिल हैं। चौधरी चरण सिंह कृषि विश्वविद्यालय, हिसार के कुलपति प्रोफेसर बी आर कंभोज को विशेष आमंत्रित सदस्य के रूप में नामित किया गया है।

सूचना प्रसारण मंत्रालय ने किया नेटपिलक्स के कंटेंट प्रमुख को तलब

नई दिल्ली/एजेंसी।

सरकार ने वेबसीरीज 'आईसी-814 द कंधार हाइजैक' में अपहर्ताओं के चित्रण को लेकर उठे विवाद के बाद ओटीडी मंच नेटपिलक्स के कंटेंट प्रमुख को तलब किया है। आधिकारिक सूत्रों ने कहा कि सूचना और प्रसारण मंत्रालय ने नेटपिलक्स इंडिया के कंटेंट प्रमुख को मंगलवार को बुलाया है और वेबसीरीज के कथित विवादस्पद पहलुओं पर स्पष्टीकरण देने को कहा है। काठमांडू से दिल्ली की उड़ान भरने वाले इंडियन एयरलाइन्स के विमान के अपहर्ताओं के चित्रण से विवाद खड़ा हो गया है और कई दर्शकों ने



इस पर आपत्ति जताई है। भाजपा के आईटी प्रकोष्ठ के प्रमुख अमित मालवीय ने कहा कि आईसी-814 के अपहर्ता खुंखार आतंकवादी थे जिन्होंने अपनी मुस्लिम पहचान बदलने के लिए दूसरे नाम रख रखे थे। मालवीय ने 'एक्स' पर लिखा, "फिल्मकार अनुभव सिन्हा ने उनके गैर-मुस्लिम नामों को तबज्जो देकर अपनी आपराधिक मंशा को वैधता प्रदान की है।"

पेरिस पैरालंपिक 2024 : पैरा बैडमिंटन में नितेश कुमार ने जीता गोल्ड मेडल

नई दिल्ली/एजेंसी।

पेरिस पैरालंपिक 2024 में भारत को दूसरा गोल्ड मेडल मिल गया है। पैरालंपिक के पांचवें दिन यानी सोमवार को नितेश कुमार ने पैरा बैडमिंटन के मेंस सिंगल्स एसएल3 डब्ले में गोल्ड मेडल जीता है। नितेश ने ग्रेट ब्रिटेन के डेनियल बेथेल को फाइनल में हराया है। इसके साथ ही भारत की शोली में अब कुल 9 मेडल हो चुके हैं। इसके साथ ही पैरा-बैडमिंटन में अभी तक का भारत का ये पहला मेडल है। इस दौरान पैरा बैडमिंटन खिलाड़ी नितेश कुमार ने शानदार प्रदर्शन किया। उन्होंने ब्रिटिश खिलाड़ी डेनियल बेथेल को मुकाबले में 21-14, 18-21, 23-21 के स्कोर से हराया। इस मैच में नितेश ने पहला मैच 21-14 से जीता, जबकि दूसरे मैच में पिछड़ गए लेकिन तीसरे मैच में बेहतरीन वापसी करते हुए

मुर्मु, धनखड़ और मोदी ने स्वर्ण पदक दी बधाई



राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु, उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और केन्द्रीय खेल मंत्री गनसूख गांडिया ने सोमवार को पेरिस पैरालंपिक खेलों में स्वर्ण पदक जीतने पर नितेश कुमार को हार्दिक बधाई दी। उन्होंने अपने पोस्ट में लिखा, अपने पहले पैरालंपिक में स्वर्ण पदक जीतकर शानदार कौशल और धैर्य का परिचय दिया है। देश उनसे भारत के लिए और अधिक गौरव लाने की उम्मीद करता है।

उन्होंने मुकाबले जीत लिया। ब्रिटिश खिलाड़ी से उनकी कड़ी टकर मिली। वहीं नितेश कुमार ने पैरालंपिक 2024 में भारत को दूसरा मेडल दिलाया है। इससे पहले अरवि लेखरा ने बिम्से 10 मीटर एयर राइफल सा1 डब्ले में भारत को पहला गोल्ड दिलाया था। बता दें कि, नितेश

जब 15 साल के थे उस दौरान उनकी जिंदगी में दुखद मोड़ आया और 2009 में विशाखापट्टनम में एक ट्रेन दुर्घटना में उन्होंने अपना पैर गंवा दिया। नितेश को आईआईटी-मंडी में पढ़ाई के दौरान बैडमिंटन की जानकारी मिली और फिर ये खेल उनकी ताकत बन गया।

सुरक्षा मामलों की समिति ने सुखोई विमानों के लिए 240 एयरो इंजन की खरीद को मंजूरी दी

नई दिल्ली/एजेंसी।

केन्द्रीय मंत्रिमंडल की सुरक्षा मामलों की समिति ने देश की रक्षा को मजबूत करने की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण और बड़ा निर्णय लेते हुए वायु सेना के प्रमुख लड़कू विमानों सुखोई -30 के लिए 26000 करोड़ रुपये की लागत से 240 एयरो इंजन की खरीद के प्रस्ताव को सोमवार को मंजूरी दे दी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में हुई बैठक में इस प्रस्ताव का अनुमोदन किया गया। इसके तहत वायु सेना के सुखोई -30 एमकेआई लड़कू विमानों के लिए हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड से खरीदे (भारतीय) श्रेणी के तहत 240 एयरो-इंजन (एएल-31 एफपी) खरीद की जायेगी। इन विमानों की खरीद पर सभी करों और शुल्कों को मिलाकर 26,000 करोड़ रुपये से अधिक का व्यय होगा। इन एयरो-इंजन की डिलीवरी एक साल बाद शुरू होगी और आठ साल की अवधि

में पूरी होगी। रक्षा मंत्रालय ने एक वक्तव्य जारी कर कहा कि इंजनों में 54 प्रतिशत से अधिक स्वदेशी सामग्री होगी, जो एयरो-इंजन के कुछ प्रमुख घटकों के स्वदेशीकरण के



कारण बढ़ी है। इनका निर्माण एचएएल के कोरापुट डिवीजन में किया जाएगा। सुखोई -30 विमान वायुसेना के सबसे शक्तिशाली और रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण बेड़े में से एक है। एचएएल द्वारा इन एयरो-इंजन की आपूर्ति वायुसेना के बेड़े की आवश्यकता को पूरा करेगी ताकि उनके निर्बाध संचालन जारी रह सकें और देश की रक्षा तैयारियों को मजबूत किया जा सके।

संक्षिप्त सार

लीकेज के कारण दिल्ली के कई इलाकों में पानी की आपूर्ति नहीं

नई दिल्ली। कमला मार्केट में पानी की लाइन में लीकेज के कारण सोमवार को सुबह दिल्ली के कई इलाकों में पानी की आपूर्ति नहीं होगी या बेहद कम दबाव पर पानी की आपूर्ति होगी। एक अधिकारिक बयान में यह जानकारी दी गई। बयान में कहा गया, “आसफ अली रोड पर कमला मार्केट में पानी की लाइन में लीकेज को ठीक करने के लिए वजीराबाद जल शोधन संयंत्र फेज-दो और चंद्रवल जल शोधन संयंत्र को दो सितंबर आधी रात 12:30 बजे तक बंद रखा जाएगा।” दिल्ली जल बोर्ड ने कहा कि दो सितंबर को सुबह आपूर्ति या तो कम दबाव पर होगी या बिल्कुल नहीं होगी। बयान में कहा गया है कि प्रभावित क्षेत्रों में करोल बाग, पटेल नगर और सदर बाजार, राजेंद्र नगर, एनडीएमसी, अशोक विहार, त्रि नगर, छवनी क्षेत्र, लॉरेस रोड और आसपास के इलाके शामिल हैं। बयान के अनुसार, केंद्रीय नियंत्रण कक्ष से पानी के टैंकरों का अनुरोध किया जा सकता है।

पश्चिमी दिल्ली में चाकू घोंपकर पत्नी को मार डाला, शव कार में ही छोड़ा

नई दिल्ली। पश्चिमी दिल्ली के राजौरी गार्डन इलाके में 21 वर्षीय एक व्यक्ति ने चाकू घोंपकर अपनी पत्नी की हत्या कर दी और उसका शव अपनी कार में ही छोड़ दिया। अधिकारियों ने सोमवार को यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि आरोपी की पहचान गौतम के रूप में हुई है और जब वह भागने की कोशिश कर रहा था तभी इलाके में गश्त कर रहे एक पुलिस अधिकारी ने उसे पकड़ लिया। गौतम देर रात संदिग्ध हालात में बिना कमीज पहने घूम रहा था तभी रात एक बजकर 20 मिनट पर ख्याला पुलिस थाने में तैनात हेड कांस्टेबल अजय ने उसे पकड़ लिया और पूछताछ की तो घटना का खुलासा हुआ। पूछताछ करने पर गौतम ने बताया कि उसने अपनी पत्नी मान्या की हत्या कर उसका शव कार में ही छोड़ दिया है। एक अधिकारी ने बताया कि मामले की पड़ताल की गई तथा पूछताछ जारी रखी गई जिसके बाद रघुबीर नगर निवासी गौतम ने पुलिस से बताया कि उसने मार्च में अपने परिवार की सहमति के बिना मान्या से शादी की थी। अधिकारी ने बताया कि शादी के बाद भी वे अपने-अपने परिवार के साथ ही रह रहे थे और कभी-कभार मिलते थे। विवाह रात गौतम कार में राजौरी गार्डन इलाके के तितारपुर में मान्या से मिलने आया था। एक अन्य पुलिस अधिकारी ने बताया, “रात करीब 11 बजे मान्या ने जोर देकर कहा कि दोनों को एक साथ रहना चाहिए और इस बात को लेकर कार में ही दोनों के बीच बहस हो गई।”

राहुल ने डीटीसी कर्मचारियों से संवाद का वीडियो साझा किया, ‘अन्याय’ को किया रेखांकित

नई दिल्ली। लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने सोमवार को डीटीसी कर्मचारियों की समस्याओं को रेखांकित किया और कहा कि जो लोग प्रतिदिन लाखों यात्रियों की यात्रा को सुगम बनाते हैं, उन्हें बदले में केवल ‘अन्याय’ का सामना करना पड़ता है। दिल्ली परिवहन सेवा (डीटीसी) के कर्मचारियों के साथ पिछले सप्ताह हुई बातचीत और बस में सफर का वीडियो साझा करते हुए गांधी ने कहा कि डीटीसी कर्मचारी सरकार से पृष्ठ रहे हैं कि यदि वे स्थायी नागरिक हैं तो उनकी नौकरियां अस्थायी क्यों हैं। उन्होंने ‘एक्स’ पर एक पोस्ट में कहा, “कुछ दिनों पहले दिल्ली में एक सुखद बस यात्रा के अनुभव के साथ डीटीसी कर्मचारियों से संवाद कर उनकी दिनचर्या और समस्याओं की जानकारी ली।” उन्होंने कहा, “न सामाजिक सुरक्षा, न स्थिर आय और न ही स्पष्ट नौकरीज ठेके पर मजदूरी ने एक बड़ी जिम्मेदारी के काम को मजबूरी के मुकाम पर पहुंचा दिया है।” गांधी ने कहा कि ड्राइवर और कंडक्टरों को अनिश्चितता के अंधरे में जीने के लिए मजबूर किया जा रहा है, तथा यात्रियों की सुरक्षा के लिए लगातार तैनात होमगार्ड छह महीने से बिना वेतन के काम कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि इस उग्रता से त्रस्त होकर देश भर के सरकारी कर्मचारियों की तरह डीटीसी कर्मचारी भी लगातार निजीकरण के डर के साए में जी रहे हैं।

कड़कड़डूमा अदालत में सुनवाई के दौरान आरोपी ने गवाह पर हमला किया

नई दिल्ली। कड़कड़डूमा अदालत में सोमवार को एक आपराधिक मामले के गवाह पर आरोपी ने कथित तौर पर ब्लेड से हमला कर दिया। एक सूत्र ने यह जानकारी दी। यह घटना उस समय घटी जब विशेष न्यायाधीश आलेक शुक्ला मामले की सुनवाई कर रहे थे। हमले के वक्त मौजूद एक सूत्र ने कहा, आरोपी ने गवाह के साथ तीखी नोकझोंक के बाद उस पर ब्लेड से हमला कर दिया। पीड़ित के चेहरे और गर्दन पर चोटें आईं, जिसके बाद अदालत परिसर में तैनात चौकी पुलिस ने उसे अस्पताल पहुंचाया। उन्होंने कहा, हमले के बाद कोर्ट रुम में खून के छीटे पड़े हुए थे। आरोपी आपराधिक मामले में न्यायिक हिरासत में था।

अमानतुल्लाह ने जन कल्याण के पैसे का गबन किया : बांसुरी

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी विधायक अमानतुल्लाह खान के आवास पर ईडी रेड को लेकर सांसद बांसुरी स्वराज ने प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने खान पर जनकल्याण फंड का गलत इस्तेमाल करने का आरोप लगाया है। नई दिल्ली से भाजपा सांसद बांसुरी स्वराज ने अमातुल्लाह खान के घर पर ईडी रेड को एकदम सही ठहराते हुए कहा, अमानतुल्लाह खान के खिलाफ बहुत ही संपीन आरोप हैं। जब वो वक्फ बोर्ड के अध्यक्ष थे तो उन्होंने अवैध तरीके से लोगों को नौकरियों में भर्ती किया। उन्होंने वो पैसा जो जन कल्याण के लिए लगाना था, उस पैसा का गबन किया, उस पैसे का गलत इस्तेमाल किया। उन्होंने ईडी छापेमारी को बिल्कुल सही करार दिया। बोलीं, सीबीआई उनके खिलाफ जांच कर रही थी। ईडी ने जो आज उनके यहां पर रेड की है वह एकदम जायज है। कोई भी व्यक्ति, वह कितना ही शक्तिशाली क्यों ना हो? वह कानून के दायरे के बाहर नहीं है इसलिए अमान उल्लाह खान की जवाबदेही बनती है। भाजपा के ही सांसद योगेंद्र चंदेलिया ने आम आदमी पार्टी के नेताओं और मंत्रियों को आदमन अपराधी बताया। उन्होंने कहा कि दिल्ली में आम आदमी पार्टी के सारे विधायक भ्रष्ट हैं, जब ये लोग जांच के दायरे में आते हैं आम आदमी पार्टी के विधायक, मंत्री, मुख्यमंत्री सहित सभी आदतन अपराधी हैं।

भाजपा के मनगढ़ंत शराब घोटाले की कहानी का एक और गुब्बारा फूट गया: आप

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी (आप) ने पार्टी के नेता विजय नायर को सोमवार को उच्चतम न्यायालय से 23 महीने बाद जमानत मिलने को सत्य की विजय करार देते हुए कहा कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के मनगढ़ंत शराब घोटाले की कहानी का एक और गुब्बारा आज फूट गया। आप ने कहा कि धीरे-धीरे भाजपा की पूरी साजिश धराशायी हो रही है। सत्य परेशान हो सकता है, पराजित नहीं। भाजपा और उसकी केंद्र सरकार ने हमारे नेताओं के खिलाफ साजिश रची और उन्हें फ़र्जी मामले लगाकर जेल में डाल दिया लेकिन अब भाजपा की साजिशों का लगातार खुलासा हो रहा है। पहले सुप्रीम कोर्ट ने मनीष सिसोदिया को जमानत दी और अब विजय नायर को जमानत दी है।

ईडी ने चार घंटे की पूछताछ के बाद ‘आप’ नेता अमानतुल्लाह को किया गिरफ्तार

नई दिल्ली/एजेंसी।

आम आदमी पार्टी के नेता व ओखला से विधायक अमानतुल्लाह खान को ईडी ने चार घंटे की लंबी पूछताछ के बाद गिरफ्तार कर लिया है। जांच एजेंसी सुबह मनी लॉन्ड्रिंग मामले में आप विधायक के आवास पर पूछताछ करने पहुंची थी। इसका वीडियो भी सामने आया था। वीडियो में देखा जा सकता है कि कैसे आप विधायक ईडी टीम को अंदर से आने से मना कर रहे हैं। वीडियो में आप विधायक यह कहते हुए नजर आ रहे हैं कि आपको मेरे घर से कुछ नहीं मिलेगा। आप लोग बेवजह मुझे परेशान कर रहे हैं। आप विधायक पर दिल्ली वक्फ बोर्ड का अध्यक्ष रहने के दौरान वित्तीय अनियमितता, कदाचार और अवैध भर्ती का आरोप है। वो इन आरोपों को शुरू से ही नकारते आए हैं। उनका दावा है कि राजनीतिक

आप और भ्रष्टाचार एक-दूसरे के पर्याय बन गये हैं : भाजपा

नई दिल्ली /एजेंसी।

भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने सोमवार को आम आदमी पार्टी (आप) सरकार के स्वास्थ्य विभाग में भ्रष्टाचार का आरोप लगाया और दावा किया कि दिल्ली भ्रष्टाचार निरोधक शाखा (एसीबी) ने इसका संज्ञान लिया है। प्रदेश भाजपा अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा ने यहां संवाददाता सम्मेलन में दावा किया कि पार्टी ने आप के भ्रष्टाचार के संबंध में दिल्ली एसीबी में शिकायत दर्ज कराई है और शाखा ने इसका संज्ञान लिया है। भाजपा के इस आरोप पर आप की अभी कोई प्रतिक्रिया नहीं आयी है। सचदेवा ने कहा, “चाहे स्वास्थ्य विभाग हो या शिक्षा विभाग या कोई अन्य विभाग हो, दिल्ली सरकार के सभी विभाग भ्रष्टाचार के केंद्र बन गए हैं।” उन्होंने कहा कि आप और भ्रष्टाचार एक-दूसरे के पर्याय बन गए हैं तथा



साजिश के तहत उन पर इस तरह के झूठे आरोप लगाए जा रहे हैं। 2 सितंबर की सुबह जब ईडी की टीम ‘आप’ विधायक के घर पहुंची, तो पार्टी के नेताओं ने एक सुरु में इसका विरोध किया। मनीष सिसोदिया ने ईडी कार्रवाई की निंदा करते हुए कहा, ईडी की निर्दयता देखिये अमानतुल्लाह खान पहले ईडी की जांच में शामिल हुए उनसे आगे के लिए समय मांगा, उनकी सास को कैसर है। उनका ऑपरेशन हुआ है, घर में सुबह-



पर ठीकरा फोड़ देते हैं। अगर ऐसा है तो फिर मेरी के तौर पर आप क्या कर रहे हैं?” इसी तरह भाजपा विधायक विजेंद्र गुप्ता ने कहा कि आप के मंत्रियों ने मोहल्ला क्लोनिक एवं अन्य अस्पतालों को भ्रष्टाचार का अड्डा बना दिया है। गुप्ता ने कहा, “भाजपा विधायकों ने एसीबी को शिकायत के साथ विस्तृत रिपोर्ट भी दी है, जिसमें भ्रष्टाचार की पूरी जानकारी है,

सुबह धावा बोलने पहुंच गये। अमानतुल्लाह खान के खिलाफ कोई सबूत नहीं है, लेकिन मोदी की तानाशाही और ईडी की गुंडागर्दी दोनों जारी है। वहीं, दिल्ली बीजेपी के प्रदेश अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा ने अमानतुल्लाह खान पर निशाना साधते हुए कहा, आम आदमी पार्टी में भ्रष्टाचारी नेताओं की कोई कमी नहीं है। हैरानी की बात है कि जब जांच एजेंसी उनके खिलाफ कार्रवाई कर रही है, तो ये लोग चोतरफा हो-हल्ला कर रहे हैं। दिल्ली वक्फ

आठवले का ऐलान: गठबंधन के तहत सहमति बनी तो हरियाणा में 2 सीटों पर लड़ेंगी चुनाव, नहीं तो 8-10 सीट पर उतारेगी अपने उम्मीदवार

नई दिल्ली। दिल्ली के प्रेस क्लब ऑफ इंडिया में आयोजित एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में एनडीए में शामिल रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडिया (आठवले) की नॉर्थ इंडिया अध्यक्ष मंजू छिब्बर और हरियाणा प्रदेश अध्यक्ष एडवोकेट रवि सोनू कुंडली ने हरियाणा विधानसभा चुनाव को लेकर महत्वपूर्ण घोषणा की है। उन्होंने प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित करते हुए कहा कि उनकी पार्टी हरियाणा में 8 से 10 सीटों पर चुनाव लड़ेगी। रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडिया (आठवले) की नॉर्थ इंडिया अध्यक्ष मंजू छिब्बर ने कहा, हम हरियाणा में 8 से 10 सीटों पर चुनाव लड़ने के लिए पूरी तरह तैयार हैं। अगर हमें बीजेपी 02 सीट भी नहीं डेटी है तो हम 10 सीटों पर अपने उम्मीदवार उतारेगे और पूरे दम खम से लड़ेंगे लड़ेंगे 7 भाजपा के साथ हमारा गठबंधन मजबूत है,



और सीटों के बंटवारे पर सकारात्मक चर्चा चल रही है। यदि किसी कारणवश सीटों पर सहमति नहीं बनती, तो भी हम भाजपा के खिलाफ कोई प्रचार नहीं करेंगे। हमारा उद्देश्य केवल जनहित के मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करना और प्रदेश की जनता की सेवा करना है। एडवोकेट रवि कुंडली ने भी स्पष्ट किया कि उनकी पार्टी या उनके नेता भाजपा के खिलाफ कोई प्रचार नहीं करेंगे। उन्होंने कहा कि गठबंधन के नियमों को निभाने का पूरा प्रयास किया जाएगा, ताकि एनडीए की फिता और ताकत बनी रहे।

एडवोकेट रवि कुंडली ने यह भी बताया कि उनकी पार्टी की प्राथमिकता चुनावी मुद्दों पर केंद्रित रहेगी। जिसमें शिक्षा, स्वास्थ्य और अन्य जनहित के मुद्दे प्रमुख होंगे। उन्होंने जोर देकर कहा कि उनकी पार्टी का उद्देश्य राजनीति के माध्यम से जनता की सेवा करना है और वे भारत रत्न डॉ. भीमराव अंबेडकर की शिक्षाओं का अनुसरण करते हुए समाज के विभिन्न वर्गों को जागरूक करने का काम निरंतर करते रहेंगे। आठवले के राष्ट्रीय अध्यक्ष और केंद्रीय सामाजिक न्याय एवं

अधिकारिता मंत्री रामदास अठवले के नेतृत्व में पार्टी का जनाधार लगातार बढ़ता जा रहा है और हरियाणा में पार्टी संगठन को भी मजबूत किया गया है। प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान एडवोकेट रवि कुंडली ने यह भी घोषणा की कि अगले सप्ताह केंद्रीय मंत्री रामदास अठवले हरियाणा विधानसभा चुनाव को लेकर हरियाणा दौर पर आएंगे। इस प्रेस कॉन्फ्रेंस में माननीय अध्यक्षा श्रीमती मंजू छिब्बर एएससी सेल के अध्यक्ष रमेश चौधरी, जिला करनाल अध्यक्ष प्रदेश सचिव मुकेश सिरौही, सुनील साहू , मनोज सिंधिया,, जिला कुरुक्षेत्र अध्यक्ष मास्टर सूरजभान मेहरा और महिला सहित अन्य प्रमुख नेता भी उपस्थित रहे। इस प्रेस कॉन्फ्रेंस से यह स्पष्ट हो गया है कि आठवले हरियाणा विधानसभा चुनाव में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए तैयार है।

‘आम आदमी पार्टी में भ्रष्टाचारों की जमात’, अमानतुल्लाह खान पर बोले वीरेंद्र सचदेवा

नई दिल्ली। दिल्ली बीजेपी के प्रदेश अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा ने आप नेता व ओखला से विधायक अमानतुल्लाह खान के ईडी अधिकारियों संग किए बर्ताव की निंदा की है। दरअसल, सोमवार को ईडी की टीम अमानतुल्लाह खान के घर छापेमारी के लिए पहुंची थी, जिसका खान ने विरोध किया। सचदेवा के मुताबिक आम आदमी पार्टी में भ्रष्टाचारी नेताओं की संख्या ज्यादा है। बीजेपी ने कहा, आम आदमी पार्टी में भ्रष्टाचारी नेताओं की कोई कमी नहीं है। हैरानी की बात है कि जब कभी जांच एजेंसियां इनके खिलाफ कोई कार्रवाई करती है, तो ये लोग चिल्लाने लगते हैं। दिल्ली वक्फ बोर्ड जैसी संस्था में गबन करने वाले अमानतुल्लाह खान को कैसे अमानतुल्लाह खान और उनके परिजन ईडी की टीम का विरोध कर चर्चा में रहते हैं। आज जब जांच



एजेंसी अपनी कार्रवाई कर रही है, तो देखिए चोतरफा हो-हल्ला हो रहा है। अगर आपने चोरी की है, अपराध किया है, तो आपको उसका जवाब देना होगा, क्योंकि इस देश में कानून का शासन है और कानून सबके लिए बराबर है। बता दें कि सोमवार को ईडी की टीम आप विधायक अमानतुल्लाह खान के घर छापेमारी करने पहुंची, तो उनके परिजनों ने इसका प्रतिकार किया। इसका वीडियो भी सामने आया है। वीडियो में देखा जा सकता है कि कैसे अमानतुल्लाह खान और उनके परिजन ईडी की टीम का विरोध कर

रहे हैं। उन्हें घर में आने से रोक रहे हैं। आप विधायक ईडी की टीम को वापस जाने के लिए कह रहे हैं। इसके अलावा, वो ईडी की टीम से यह भी कहते हुए नजर आ रहे हैं कि आपको मेरे घर में कुछ नहीं मिलेगा। मेरी सास अभी बीमार हैं। कुछ दिनों पहले ही उनका ऑपरेशन हुआ है। इसके अलावा, वीडियो में एक महिला की भी आवाज आ रही है। वो अंग्रेजी में ईडी की टीम को यह कहते हुए नजर आ रही है कि अगर मेरी मां को कुछ हुआ, तो मैं आपके खिलाफ न्यायालय का दरवाजा खटखटाऊंगी। उमर, इस संबंध में आप नेता संजय सिंह की ओर से भी तीखी प्रतिक्रिया सामने आई है। उन्होंने कहा, -ईडी की निर्दयता देखिये अमानतुल्लाह खान पहले ईडी की जांच में शामिल हुए उनसे आगे के लिए समय मांगा।

श्री धार्मिक रामलीला चिराग दिल्ली में हुआ भूमि पूजन

नई दिल्ली। श्री धार्मिक रामलीला दक्षिणी चिराग दिल्ली में इस वर्ष रामलीला के लिए भूमि पूजन किया गया। भूमि पूजन के दौरान इलाके के गणमान्य नागरिक मौजूद रहे। वहीं भूमि पूजन के बाद गणेश वंदना से रामलीला का मंचन किया गया। जिसमें राम विवाह, राम का वनवास, कैकेयी और भरत प्रसंग, रावण अंगद और हनुमान प्रसंग आदि के प्रसंगों का मंचन किया गया। श्री धार्मिक रामलीला दक्षिणी दिल्ली के मुख्य संरक्षक श्री राकेश गुलिया ने बताया कि इस बार भी हर वर्ष की तरह भव्य राम लीला का आयोजन किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि इस का स्टेज भव्य प्रेम मंदिर की तर्ज पर 125 फुट लंबा और तीन मंजिला होगा। उन्होंने कहा कि इस बार रामलीला के मंचन में प्लास्टिक का न के बराबर

उपयोग किया जाएगा। रामलीला का मंचन 02 अक्टूबर से शुरू होगा और 12अक्टूबर 2024 तक चलेगा। वहीं भूमि पूजन के मौके



पर अतिथि के तौर पर पूर्व विधायक राजेश गहलोत बीजेपी, श्याम शर्मा, पूर्व निगम पार्षद सुनीता गुलिया, प्रधान आनंद जैन, सुशील गुप्ता, सुदर गुप्ता, कपिल शर्मा, सोमनाथ मुखर्जी नागेंद्र गुलिया, धर्मेन्द्र गुलिया, हर्ष गुलिया, जितेन्द्र अहलावत, प्रदीप तेवतिया, विक्रान्त गुलिया, इंद्रजीत गुलिया कार्यकारणी सदस्यों सहित मौजूद रहे।

सम्पादकीय...

अमृत इंडिया

मानवता के लिए एक बड़ा खतरा बनकर उभर रहे हैं परमाणु ऊर्जा संयंत्र

युद्धों का मतलब सैन्य औद्योगिक परिसरों के लिए बहुत बड़ा मुनाफ़ा है। कहा जाता है कि वर्तमान सैन्य गतिविधि के कारण पर्यावरण को होने वाला नुकसान कुल पर्यावरणीय गिरावट का लगभग 5.4 प्रतिशत है। परमाणु हथियारों की मौजूदगी ही एक बड़ा खतरा है। अगर इन हथियारों का इस्तेमाल नहीं भी किया जाता है, तो भी इनके रखरखाव में शामिल लागत का प्रभाव स्वास्थ्य, शिक्षा और अन्य सामाजिक जरूरतों पर किये जाने वाले निवेश पर पड़ता है। पहले जापोरिज्जिया और अब कुर्सक में परमाणु ऊर्जा संयंत्र खतरे में हैं, जो अत्यधिक चिंता का विषय हैं। संयुक्त राष्ट्र परमाणु निगरानी संस्था अंतरराष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी (एआईईए) के प्रमुख राफेल ग्रांसी ने 27 अगस्त को रूस के कुर्सक परमाणु संयंत्र के दौर के दौरान चेतावनी दी कि स्थिति बहुत गंभीर है क्योंकि यह संयंत्र युद्ध क्षेत्र से मुश्किल से 50 किलोमीटर दूर स्थित है। आईईए ने परमाणु ऊर्जा संयंत्रों के लिए खतरे के बारे में कई चेतावनियां जारी की हैं, खासकर रूसी सेना द्वारा दक्षिणी यूक्रेन में जापोरिज्जिया परमाणु संयंत्र पर कब्ज़ा करने के बाद। आईईए प्रमुख ने चेतावनी दी कि परमाणु ऊर्जा संयंत्रों पर कभी भी हमला नहीं किया जाना चाहिए। यह एक अत्यंत गंभीर चेतावनी है जो आईईए प्रमुख के मुंह से निकली है। श्री माइल आइलैंड, चेरनोबिल और फुकुशिमा परमाणु ऊर्जा संयंत्र आपदाओं की भयानक यादें हमें उन क्षेत्रों में और उसके आसपास के क्षेत्रों में जीवन और बुनियादी ढांचे के भारी नुकसान की याद दिलाती हैं, साथ में विकिरणों के दीर्घकालिक परिणाम की भी। इसलिए वैश्विक समुदाय न केवल चिंतित है बल्कि भयभीत भी है कि अगर यूक्रेन में युद्ध बढ़ता है, तो परमाणु दुर्घटना के खतरे से इंकार नहीं किया जा सकता है। रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने चेतावनी दी है कि अगर उनकी संप्रभुता या क्षेत्र को खतरा हुआ तो उनका देश परमाणु हथियारों का इस्तेमाल करने से पीछे नहीं हटेगा। उन्होंने यह बयान 5 जून 2024 को दिया जब वे रूस द्वारा 2022 में यूक्रेन पर पूर्ण पैमाने पर आक्रमण शुरू करने के बाद पहली बार अंतरराष्ट्रीय समाचार एजेंसियों के वरिष्ठ संपादकों से व्यक्तिगत रूप से मिले। रूस-यूक्रेन क्षेत्र के अलावा, गाजा में महिलाओं और बच्चों पर चल रहा इजरायली आक्रमण दिल दहला देने वाला है। गाजा के नागरिकों को मवेशियों के झुंड की तरह इधर-उधर धकेला जा रहा है। इजरायली सुरक्षा बलों ने उन्हें सुरक्षित स्थानों पर जाने या मौत का सामना करने के लिए कहा है। लेकिन तथ्याकथित सुरक्षित स्थानों पर भी हमले किये जाते हैं और बच्चों और महिलाओं को बिना किसी दोष के मार दिया जाता है। 7 अक्टूबर से, विश्व स्वास्थ्य संगठन ने स्वास्थ्य सुविधाओं पर कुल 890 हमले दर्ज किये हैं, जिनमें से 443 गाजा में और 447 पश्चिमी तट पर हुए हैं। अस्पतालों को आम तौर पर युद्ध के समय सुरक्षित स्थान माना जाता है क्योंकि युद्धरत पक्षों से जिनेवा कन्वेंशन के अनुसार स्वास्थ्य सुविधाओं पर हमला नहीं करने की अपेक्षा की जाती है, जिसमें कहा गया है कि घायलों और बीमारों, अशक्तऔर प्रसूति मामलों की देखभाल करने के लिए संगठित नागरिक अस्पताल किसी भी परिस्थिति में हमले का लक्ष्य नहीं हो सकते हैं, और संघर्ष में शामिल पक्षों द्वारा हर समय उनका सम्मान और संरक्षण किया जाना चाहिए। इसलिए कई बार नागरिक सुरक्षा के लिए अस्पतालों में जाने की कोशिश करते हैं। गाजा में गंभीर भीषण संकट है क्योंकि गाजावासियों तक मानवीय सहायता पहुंचने में कई बाधाएं हैं। डब्ल्यू एच ओ और यूनिसेफ ने बीमारियों में वृद्धि के बारे में चेतावनी दी है। निवासियों में पोलियो वायरस का पता चलने से चिकित्सा बिरादरी हिल गयी है। 40, 000 से ज़्यादा लोगों की मौत 1948 के नकबा की पुनरावृत्ति है, जब दर्जनों नरसंहारों में फ़िलिस्तीनी अरबों को निशाना बनाया गया था और 500 से ज़्यादा अरब-बहुल शहर, गांव और शहरी इलाके उजड़ गये थे, जिनमें से कई या तो पूरी तरह से नष्ट हो गये या यहूदियों ने उन्हें फिर से आबाद कर दिया और उन्हें नए हिब्रू नाम दिये।



-डॉ.अनुभा जैन जर्नलिस्ट ऑथर

भारत के पाँच राज्यों में, 718 हिम तेंदुआ हैं, जो वर्तमान में दुनिया में जीवित कुल 7,500 हिम तेंदुओं का 10 प्रतिशत है। लद्दाख में सबसे अधिक 477 हैं, जिसके बाद उत्तराखंड में 124 और हिमाचल प्रदेश में 75 है। भारत में हिम तेंदुओं की वैश्विक आबादी का दस प्रतिशत हिस्सा है, जो मुख्य रूप से लद्दाख, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, सिक्किम, अरुणाचल प्रदेश और जम्मू और कश्मीर के ऊंचे पहाड़ों पर स्थितिकी तंत्रों में पाए जाते हैं। और, भारत के भीतर, कर्नाटक के मैसूर स्थित नेचर कंजर्वेशन फाउंडेशन की मदद से लुप्तप्राय जानवरों की नई जनसंख्या सर्वेक्षण के अनुसार लद्दाख में हिम तेंदुओं की सबसे अधिक संख्या है। हिमाचल प्रदेश में, राज्य सरकार ने हिम तेंदुओं की आबादी वाले क्षेत्रों में ट्रेक्स को स्वतंत्र रूप से प्रवेश करने से रोक दिया है और ऐसे ट्रैकिंग रूट तैयार किए हैं जो इस तरह परिवर्तित किये गये हैं की वे किसी भी तरह से लुप्तप्राय प्रजातियों के लिये व्यवधान उत्पन्न ना कर सकें। भारत में, हिम तेंदुआ पहला सबूत या रिकॉर्ड हिमाचल प्रदेश के कुगती वन्यजीव अभयारण्य में था। एक हालिया रिपोर्ट के अनुसार, अनुमानित 51 हिम तेंदुओं की अधिकतम संख्या हिमाचल प्रदेश के लाहौल-स्पीति और कुनौर जिलों में पाई गई। इसका संभावित निवास स्थान शिमला, कुल्लू, चंबा और कांगड़ा जिलों के ऊपरी क्षेत्रों में भी फैला हुआ है। हिमाचल प्रदेश के 10 स्थलों अर्थात ऊपरी स्पीति परिटुश्य, ऊपरी किन्नौर, पिन घाटी, तब्बू, मिगार थियेट, भागा, चंद्रा, भ्रमौर, जीएचएनपी



कस्तूरी मृग, आदि। हिम तेंदुआ, जिसे हिमाचल प्रदेश का राज्य पशु भी घोषित किया गया है, को इसके दुर्लभ दर्शन के कारण 'दी घोस्ट ऑफ दी माउंटेन्स' भी कहा जाता है। लुप्तप्राय प्रजाति हिम तेंदुआ हिमालय की बर्फीली चोटियों पर रहते हैं। आई.यू.सी.एन-विश्व संरक्षण संघ की संकटग्रस्त प्रजातियों की लाल सूची में, हिम तेंदुआ को संकटग्रस्त प्रजातियों की सूची में रखा गया है। भारत में, हिम तेंदुआ को वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 की अनुसूची 1 के तहत सूचीबद्ध किया गया है, जो इसे देश के कानूनों के तहत सर्वोच्च संरक्षण का दर्जा देता है। यही कारण है कि केंद्र सरकार ने 2009 में शुरू किए गए प्रोजेक्ट स्नो लेपर्ड नामक एक केंद्र

समर्थित कार्यक्रम विकसित किया है, जो हिमालय के उच्च ऊंचाई वाले क्षेत्रों में वन्यजीव संरक्षण को मजबूत करने की पहल के रूप में है और इसका उद्देश्य ज्ञान-आधारित और अनुकूली संरक्षण ढांचे को बढ़ावा देना है, जो स्थानीय समुदायों को संरक्षण प्रयासों में पूरी तरह से शामिल करता है, जो हिम तेंदुआ की सीमा को साझा करते हैं। वर्तमान में, भारत में हिम तेंदुआ की जनसंख्या का आकलन (एसपीएआई) भारत सरकार के पर्यावरण, वन और

हालांकि, स्नो लेपर्ड प्रोजेक्ट वर्ष 2021 में समाप्त हो गया। प्रोजेक्ट स्नो लेपर्ड का एकमात्र उद्देश्य स्नो लेपर्ड का संरक्षण करना था। गौतम ने कहा कि अब किब्बर वन्यजीव अभयारण्य सहित ऊपरी स्पीति परिटुश्य के लिए प्रोजेक्ट स्नो लेपर्ड नामक एक नई केंद्र प्रायोजित परियोजना को मंजूरी के लिए भारत सरकार को प्रस्तुत किया गया है। मैसूर स्थित नेचर कंजर्वेशन फाउंडेशन की मदद से हिमाचल प्रदेश के वन्यजीव विंग द्वारा कैमरा ट्रैप लगाकर भारत में हिम

तेंदुआ की जनसंख्या का आकलन किया गया, जिसमें कहा गया कि हिमाचल प्रदेश के लाहौल-स्पीति और किन्नौर जिलों में हिम तेंदुओं की अधिकतम संख्या दर्ज की गई। इसका संभावित आवास शिमला, कुल्लू, चंबा और कांगड़ा जिलों के ऊपरी क्षेत्रों में भी फैला हुआ है। शोधकर्ताओं ने ग्रेट हिमालयन नेशनल पार्क के दो स्टेशनों पर एक ही कैमरा ट्रैप में आम तेंदुआ और हिम तेंदुआ को देखा, जो उनके बीच एक आवास ओवरलैप का सुझाव देता है। हमीरपुर हिमाचल प्रदेश के लेखक राजेंद्र राजन ने मुझे बताया कि वन विभाग के वन्यजीव विंग ने हिम तेंदुओं के आवास का अध्ययन करने में पांच साल बिताए। स्पीति, तांबो और पिन घाटी के ट्रांस-हिमालयी क्षेत्रों

नशे की खिलाफ जंगजकितनी कामयाब होगी?

-योगेन्द्र सोनी-

पहली बार केन्द्र सरकार ने नशे के खिलाफ कोई बयान दिया है और एक्शन लेने की बात कही है। मामला यह है कि छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर से मादक पदार्थ के अवैध कारोबारियों के खिलाफ अभियान का आह्वान करते हुए केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कहा कि इससे निपटने के लिए नेटवर्क पर प्रहार करना होगा। शाह ने कहा कि इससे उत्पन्न होने वाला धन आतंकवाद और नक्सलवाद को बढ़ावा देता है और अर्थव्यवस्था को भी कमजोर करता है। यदि दृढ़ निश्चय और रणनीति के साथ बढ़ा जाए तो इस खतरे के खिलाफ लड़ाई जीत सकते हैं। गृह मंत्री ने कहा कि मादक पदार्थों से होने वाले नुकसान व अवैध कारोबार को खत्म करने के लिए चार सूत्र दिए और कहा कि हमें मादक पदार्थों की पहचान करने, अवैध कारोबारियों के

नेटवर्क को नष्ट करने, अपराधियों को हिरासत में लेने और नशे के आदी लोगों के पुनर्वास पर जोर देना होगा। लेकिन जितनी सरलता से यह बात कही है यह उतनी ही मुश्किल है चूंकि नशे का कारोबारियों ने बहुत बड़े स्तर पर अपना जाल बिछा दिया। आज मादक पदार्थ गली-गली में इतनी आसानी से मिल रहे हैं जैसे परचून की दुकान पर टॉफी-बिस्कुट। मादक पदार्थ बहुत तेजी से युवाओं को निगल रहा है। आज युवाओं की पार्टी में चरस, गांजा, अफीम, हेरोइन व ब्राउन शुगर के अलावा कई प्रकार के नशे होना बेहद आम बात हो गईं। यह सभी मादक पदार्थ पार्टी के पर्यायवाची बन चुके हैं। स्कूल व कॉलेज की बच्चों में इस नशे का क्रेज लगातार पड़ रहा है। कॉलेज में लडके व लडकियां जमकर इस तरह के नशे कर रहे हैं। हम भली-भांति देखते आ रहे हैं कि नशे की वजह से हर रोज हजारों घर बर्बाद हो रहे हैं।

यदि इस पटकथा के निर्माता की बात करें तो वह है पुलिस-प्रशासन हैं चूंकि इस तरह के मादक पदार्थ बिना प्रशासन के नहीं बिक सकता। सूत्रों के अनुसार मादक पदार्थ बिकवाने की अनुमति के पुलिस लाखों रुपये लेती है। यह मादक पदार्थ बेचने वाले एक कॉल पर डिलीवरी देने आ जाते हैं और खुला खेल प्रशासन की नाक के नीचे चलता है। विशेषज्ञों के अनुसार नशा मनुष्य के सोचने समझने की शक्ति के साथ ही पूरे शरीर पर प्रहार करता है। इसका प्रहार ऐसा होता है कि धीरे-धीरे शरीर ही नष्ट हो जाता है। यह एक ऐसा धीमा जहर होता है कि लोग जब तक इसके दुष्परिणामों को समझ पाते हैं तब तक उनका अंत हो जाता है। नशा कई रूपों में किया जाता हैं शराब, तंबाकू, पाउच व आर्टिफिशल मादक पदार्थ आदि सभी नशे की श्रेणी में आते हैं। आज नशे का सेवन भारत में सबसे अधिक होता है।

लाखों संस्थाएं भले ही नशे पर प्रतिबंध को लेकर जागरूक कार्यक्रम करती हो लेकिन वास्तव में यह दुनिया भर में एक वर्ष में 54 लाख जांमे ले रहा है। दुनिया में एक अरब लोग तंबाकू का सेवन करते हैं। भारत की बात करें तो सालाना 9 लाख मौतें तंबाकू व लगभग चार लाख मौतें चरस, गांजा, अफीम व हेरोइन से होती हैं। दस में से एक मौत में तंबाकू वजह बनती है। वहीं विश्व में सभी तरह के नशे को लेकर सेवन में भारत का दूसरा स्थान है। यह बेहद पीड़ा देने वाला आंकड़ा हैं। विशेषज्ञों के अनुसार 2030 तक 80 लाख लोगों की नशे की वजह से मौतें होंगी। डब्ल्यूएचओ द्वारा वर्ष 1988 से दुनिया को नशे के घातक दुष्परिणामों से सचेत करने के लिए 31मई को विश्व तंबाकू दिवस मनाया जाता है। बावजूद इसके लोग जागरूक होने की बजाय नशे के प्रति आकर्षित हो रहे हैं। इसके अलावा

कॉरपोरेट जगत में सिगरेट के अलावा बड़े स्तर के नशे करना एक स्टेटस सिंबल बन गया। जैसे आज से लगभग दशक पर पूर्व लोग सिगरेट पीने के लिए एक-दूसरे का कहते थे चल सिगरेट पीने चलें लेकिन अब कहते हैं कि चल माल फूंकने चले। अब चिंता का विषय यह बनता जा रहा है कि स्कूल व कॉलेज की बच्चे नशे करने लगे। नशे के क्षेत्र में हर रोज परिस्थितियां विपरीत होती जा रही हैं। बीते दिनों भारत में एक पाकिस्तानी नौका से छह सौ करोड़ मूल्य की हेरोइन पकड़ी गई थी जिससे पाकिस्तान के नशा माफियाओं को करोड़ों रुपयों का फायदा होता और वह पैसा आतंकवाद में प्रयोग होता। जैसा कि भारत में कुछ मादक पदार्थ गैर-कानूनी तरीके से कानूनी देशों से आते हैं। दरअसल, कई देशों के सत्ता प्रतिष्ठानों की मिलीभगत से नाकों-आतंकवाद के एक बड़े पैटर्न को अंजाम दिया जा रहा है।

उमेश उपाध्याय पत्रकारिता एवं राष्ट्रवादी सोच के प्रतिभापुंज

-ललित गर्ग-

पत्रकारिता के एक महान् पुरोधा पुरुष, मजबूत कलम एवं निर्भीक वैचारिक क्रांति के सूत्रधार, उत्कृष्ट राष्ट्रवादी, प्रखर मीडिया प्रशासक एवं लेखक उमेश उपाध्याय अब हमारे बीच नहीं रहे। उनका 66 वर्ष की उम्र में 1 सितम्बर 2024 को एक दुर्घटना में इस तरह अलविदा कह देना स्तब्ध कर रहा है, गहरा आघात दे रहा है, समूचा पत्रकार जगत अपने इस योद्धा को खोकर गमभीन एवं दुःखी है। एक संभावनाओं भरा हिन्दी पत्रकारिता एवं राष्ट्रीय विचारों का सफर ठहर गया, उनका निधन न केवल पत्रकारिता जगत के लिये बल्कि भारत की राष्ट्रवादी सोच के लिये अपूरणीय क्षति है। टेलीविजन, फ़्रिंट, रेडियो और डिजिटल मीडिया में चार दशकों से अधिक के अपने करियर के दौरान उन्होंने प्रमुख मीडिया संगठनों में कई महत्वपूर्ण भूमिकाएं निभाईं। मीडिया उद्योग की कार्यक्रियों की गहरी समझ, पत्रकारिता की ईमानदारी के प्रति

समर्पण और तेजी से बदलते मीडिया उद्योग के साथ सामंजस्य बिठाने की उनकी कुशलता के लिए वे जाने जाते थे। उमेश उपाध्याय का जीवन सफर आदर्शों एवं मूल्यों की पत्रकारिता की ऊंची मीनार है। उनका निधन एक युग की समाप्ति है। उमेश उपाध्याय वरिष्ठ भारतीय टेलीविजन पत्रकार, लेखक और मीडिया कार्यकारी थे। उनकी पुस्तक 'वेस्टर्न मीडिया नैटिव्स ऑन इंडिया-गांधी टू मोदी'- विदेशी मीडिया के भारत विरोधी एजेंडे की संदिग्धता को उजागर करती है। विदेशी मीडिया की भारत विरोधी साजिश को भी बेनकाब करने में इस पुस्तक की महत्वपूर्ण भूमिका है। टीआरपी की रस में तेजी से दौड़ते न्यूज़ चैनल के प्रमुख कर्ताधर्ता होने के बावजूद औरों से इतर, चीख-चीकार से दूर रचनात्मक एवं सृजनात्मक टीवी पत्रकारिता करते हुए उन्होंने जो मूल्य-मानक स्थापित किये, वे लम्बे दौर तक अविस्मरणीय रहेंगे। उनकी बड़ी विशेषता रही कि वे उद्योग की सहकर्मियों के साथ सहज, सरल और शालीन व्यवहार करते हुए सबके

प्रिय एवं आत्मीय बने रहे। उमेश उपाध्याय ने बदलते समय और तकनीक के साथ-साथ अपनी कम्प्यूनिवेशन स्किल को और ज्यादा धार दी। वे एक स्वतंत्र लेखक, स्वतंत्र मीडिया सलाहकार और विश्लेषक भी थे। उन्होंने रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड में मीडिया के अध्यक्ष और निदेशक के रूप में काम किया, इससे पहले वे नेटवर्क 18 में समाचार के अध्यक्ष थे। मीडिया और शिक्षा जगत में अपने 25 साल से ज्यादा लंबे करियर के दौरान उन्होंने जनमत टीवी में चैनल हेड, जी न्यूज़ में कार्यकारी निर्माता और आउटपुट संपादक, होम टीवी में कार्यकारी निर्माता, दूरदर्शन के संपाददाता और प्रेस ट्रस्ट ऑफ़ इंडिया में उप संपादक रहे। उन्होंने सब टीवी में भी काम किया। उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय में एक व्याख्याता के रूप में अपना करियर शुरू किया, ऑल इंडिया रेडियो (एआईआर) के साथ एक राजनीतिक विश्लेषक और टिप्पणीकार रहे हैं और एडिटर्स गिल्ड ऑफ़ इंडिया के सदस्य भी रहे हैं।

1959 में मथुरा में जन्मे उपाध्याय ने 1980 के दशक की शुरुआत में पत्रकारिता को करियर के रूप में अपनाया। उपाध्याय जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू) और दिल्ली विश्वविद्यालय के पूर्व छात्र थे। उन्होंने जेएनयू के स्कूल ऑफ़ इंटरनेशनल स्टडीज से मास्टर्स और एम.फिल किया और दिल्ली विश्वविद्यालय की अकादमिक परिषद के सदस्य के रूप में कार्य किया। माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय जनसंचार एवं पत्रकारिता संस्थान, अहमदाबाद की सलाहकार परिषद, आईआईएमसी सोसाइटी, भारतीय जनसंचार संस्थान, नई दिल्ली की कार्यकारी परिषद और भारतीय राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय सोसाइटी (एनओएस) के कार्यकारी बोर्ड के वे सदस्य रहे। उपाध्याय को पत्रकारिता और मीडिया के क्षेत्र में आजीवन योगदान के लिए गणेश शंकर विद्याथी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। वे एक

सार्वजनिक वक्ता और मीडिया मुद्दों के विशेषज्ञ भी थे। उपाध्याय समसामयिक राष्ट्रीय/ अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों पर नियमित टिप्पणीकार एवं स्तंभकार थे। उपाध्याय ने रायपुर में दिशा एजुकेशन सोसाइटी के निदेशक के रूप में शैक्षणिक क्षेत्र में एक वरिष्ठ पद संभाला। उन्होंने दिशा ग्रुप ऑफ़ इंस्टीट्यूशंस के मामलों का प्रबंधन किया और उन्हें दिशा विश्वविद्यालय के प्रो वीसी के रूप में नामित किया गया था। उपाध्याय नई दिल्ली में नारद जयंती पुरस्कारों के लिए जूरी के सदस्य भी थे। उपाध्याय भोपाल के माखन लाल राष्ट्रीय पत्रकारिता और जनसंचार विश्वविद्यालय के लिए एक नए सभित का चयन करने वाली खोज समिति के सदस्य भी थे। उमेश उपाध्याय को निर्भीक विचारों, स्वतंत्र लेखनी और बेबाक राजनैतिक टिप्पणियों के लिये जाना जाता रहा है। उनको पढ़ने वाले लोगों की संख्या लाखों में है और अपने निर्भीक लेखन से वे काफी लोगों के चहेते थे। उन्होंने पत्रकारिता में उच्चतम मानक स्थापित

किये। अपनी कलम के जरिये उन्होंने लोकतंत्र के चौथे स्तंभ को मजबूत बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनकी कलम जब भी चली उन्होंने लाखों लोगों की समस्याओं को सरकारों और प्रशासन के सामने रखा और भारतीय लोकतंत्र में लाने में आस्था को और मजबूत बनाया है योगदान दिया। हम उन्हें भारतीयता, पत्रकारिता का अक्षयकोष कह सकते हैं, वे चित्रता में मित्रता के प्रतीक थे तो गहन मानवीय चेतना के चित्तों जुझार, निडर, साहसिक एवं प्रखर व्यक्तित्व थे। वे एक ऐसे बहुआयामी व्यक्तित्व थे, जिन्हें पत्रकार जगत का एक आमजन के बीच, हर जगह अपनी काबिलियत का लोहा मनवाया। लाखों-लाखों की भीड़ में कोई-कोई उपेक्षणी जैसा विलक्षण एवं प्रतिभाशाली व्यक्ति जीवन-विकास की प्रयोगशाला में विभिन्न प्रशिक्षण एवं परीक्षण से गुजर कर महानता का वर्ण करता है, विकास के उच्च शिखरों पर आरूढ़ होता है और अपनी मौलिक

सोच, कर्मठता, कलम, जिजीविषा, पुरुषार्थ एवं राष्ट्र-भावना से समाज एवं राष्ट्र को अग्रिप्रेरित करता है। उन्होंने आदर्श एवं संतुलित समाज निर्माण के लिये कई नए अभिनव दृष्टिकोण, सामाजिक सोच और राष्ट्रियता से ओतप्रोत सकारात्मक वातावरण निर्मित करने की शुरुआत की। देश और देशवासियों के लिये कुछ खास करने का जज्बा उनमें कूट-कूट कर भरा था। वे समाज एवं पत्रकारिता के लिये पूरी तरह समर्पित थे। उनके जीवन से जुड़ी निधायक धारणा और यथार्थपरक सोच ऐसे शक्तिशाली हथियार थे जिसका वार कभी खाली नहीं गया। वे जितने उच्च नैतिक-चारित्रिक पत्रकार थे, उससे अधिक मानवीय एवं सामाजिक थे। उनके जीवन के सारे सिद्धांत मानवीयता एवं राष्ट्रियता की गहराई ये जुड़े थे और उस पर वे अटल भी रहते थे। किन्तु किसी भी प्रकार की रूढ़ि या पूर्वाग्रह उन्हें छू तक नहीं पाता। वे हर प्रकार से मुक्त स्वभाव के थे और यह मुक्त स्वभाव भीतर की मुक्ति का प्रकट रूप है।

विकसित भारत के पथ पर मजबूती से आगे बढ़ रहा है देश : माधबी बुच

मुंबई/एजेंसी। भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (सेबी) की अध्यक्ष माधबी पुरी बुच ने सोमवार को यहां कहा कि राष्ट्रीय संसाधनों के कुशल उपयोग से विकसित भारत की यात्रा में तेजी आएगी, जिससे आर्थिक समृद्धि आएगी और प्रभावी रूप से यह सुनिश्चित करके सामाजिक समावेशन को बढ़ावा मिलेगा कि प्रत्येक नागरिक विकास प्रक्रिया में भाग ले।श्रीमती बुच ने भारतीय उद्योग परिषद (सीआईआई) द्वारा आयोजित वित्त पोषण 3.0 शिखर सम्मेलन में नियामक परिदृश्य-विकसित भारत के लिए क्या आवश्यक है विषय पर अपने विचार रखते हुये कहा कि मौद्रिक क्षमता और अपेक्षित प्रौद्योगिकी के साथ, देश विकास और आर्थिक समृद्धि के साथ ही विकसित भारत के पथ पर मजबूती से आगे बढ़ रहा है। पूंजी निर्माण पर श्रीमती बुच ने कहा कि विकास को बढ़ावा देने के लिए उद्योग को पर्याप्त पूंजी का प्रावधान करना होगा और इस प्रकार सशक्त धन को आम आदमी तक पहुंचाना चाहिए। समावेशन एंजेल सेबी के लिए सबसे महत्वपूर्ण है और सेवा लागत को कम करके 250 रुपये की व्यवस्थित निवेश योजना (एसआईपी) की शुरुआत वित्तीय उत्पादों को आम आदमी तक पहुंचाने की दिशा में एक शानदार उदाहरण है।

तेलंगाना में भारी बारिश से मचा हाहाकार, मुख्यमंत्री ने मांगा राष्ट्रीय आपदा का टैग

अमरावती। तेलंगाना में भारी बारिश के कारण अब तक कम से कम 16 लोगों की जान जा चुकी है. तेलंगाना सरकार ने बारिश के दौरान मारे गए लोगों के परिजनों के लिए 5 लाख की अनुग्रह राशि की घोषणा की और केंद्र से तत्काल सहायता का आग्रह किया। रेवंत रेड्डी के नेतृत्व वाली तेलंगाना सरकार ने प्रारंभिक अनुमान के अनुसार नुकसान ₹5,000 करोड़ बताया और केंद्र से 2,000 करोड़ की तत्काल सहायता मांगी। रेड्डी ने यह भी आग्रह किया कि केंद्र तेलंगाना बाढ़ को राष्ट्रीय आपदा घोषित करे। लगातार बारिश के कारण निचले इलाकों में पानी भर गया, कृषि फसलों को नुकसान हुआ और पड़ोसी आंध्र प्रदेश के साथ राज्य का रेल और सड़क संपर्क बाधित हो गया। तेलंगाना में भारी बारिश के कारण निचले इलाकों में बाढ़ आ गई और संपत्ति और संरचनाओं को काफी नुकसान हुआ। प्रारंभिक अनुमान के मुताबिक, बाढ़ के कारण राज्य में 5,000 करोड़ रुपये की क्षति हुई है। रेड्डी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से बारिश प्रभावित इलाकों का दौरा करने और बाढ़ को राष्ट्रीय आपदा घोषित करने का आग्रह किया।

आईआईटी बॉम्बे सरकारी श्रेणी में और बिट्स पिलानी निजी श्रेणी में शीर्ष इंजीनियरिंग कॉलेज

नई दिल्ली। भारतीय संस्थागत रैंकिंग फ्रेमवर्क (आईआईआरएफ) ने 2024 के लिए भारत में शीर्ष इंजीनियरिंग कॉलेजों की अपनी बहुप्रतीक्षित सूची सोमवार को जारी की गयी जिसमें भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) बॉम्बे सरकारी श्रेणी में और बिरला इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (बिट्स) पिलानी निजी श्रेणी में देश में शीर्ष इंजीनियरिंग कॉलेज बनने में सफल रहा है।आईआईआरएफ रैंकिंग की सूची उसकी वेबसाइट पर उपलब्ध है जो देश भर के प्रमुख इंजीनियरिंग संस्थानों का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करती है। सरकारी इंजीनियरिंग कॉलेजों की श्रेणी में प्रतिष्ठित आईआईटी बॉम्बे एक बार फिर 2024 के लिए भारत में शीर्ष इंजीनियरिंग संस्थान के रूप में उभरा है। तकनीकी शिक्षा में अग्रणी के रूप में आईआईटी बॉम्बे की स्थिति की यह पुष्टि कोई आश्चर्य की बात नहीं है, क्योंकि अकादमिक और शोध क्षेत्रों में उत्कृष्टता की इसकी दीर्घकालिक परंपरा है। आईआईआरएफ रैंकिंग में आईआईटी बॉम्बे का निरंतर प्रभुत्व इसके निरंतर प्रदर्शन, अत्याधुनिक शोध पहलों और एक मजबूत प्लेसमेंट रिकॉर्ड को दर्शाता है जो पूरे देश से शीर्ष-स्तरीय प्रतिभाओं को आकर्षित करता है। रैंकिंग में आईआईटी बॉम्बे के ठीक पीछे भारत की प्रमुख तकनीकी शिक्षा प्रणाली के दो अन्य दिग्गज आईआईटी मद्रास और आईआईटी दिल्ली हैं।

केंद्र सरकार ने मुंबई-इंदौर के बीच नई रेल लाइन को दी मंजूरी

नई दिल्ली। मंत्रिमंडल की आर्थिक मामलों की समिति (सीसीईए) ने दो प्रमुख वाणिज्यिक केंद्रों मुंबई तथा इंदौर के बीच 309 किलोमीटर लंबी नई रेल लाइन परियोजना को सोमवार को मंजूरी दे दी। यह परियोजना दोनों शहरों के बीच सबसे छोटी रेल संपर्क सुविधा प्रदान करेगी। केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्री अश्विनी वैष्णव ने यह जानकारी देते हुए कहा कि परियोजना की कुल लागत 18,03६ करोड़ रुपये आंकी गई है। यह 2028-29 तक पूरी होगी। इस परियोजना के निर्माण के दौरान करीब 102 लाख मानव श्रम दिवस प्रत्यक्ष रोजगार उत्पन्न होगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर लिखा, "आज के मंत्रिमंडल के फैसले से मुंबई और इंदौर के बीच संपर्क सुविधा बेहतर होगी। बाद में आधिकारिक बयान में कहा गया कि इंदौर और ममनाड के बीच नई लाइन सीधी संपर्क सुविधा प्रदान करेगी और परिवहन व्यवस्था में सुधार करेगी। यह परियोजना 'ग्लोटी-मॉडल कनेक्टिविटी के लिए पीएम-गति शक्ति राष्ट्रीय मास्टर प्लान का परिणाम है जो एकीकृत योजना के जरिये संभव हो पाया है। यह लोगों, वस्तुओं तथा सेवाओं की आवाजाही के लिए निर्बाध संपर्क प्रदान करेगी।

वैश्विक पूंजी प्रवाह को प्रबंधित करते हुए आर्थिक वृद्धि को सुरक्षित रखने की जरूरत : नागेश्वरन

मुंबई। भारत सरकार के मुख्य आर्थिक सलाहकार डॉ. वी. अनंथा नागेश्वरन ने सोमवार को यहां कहा कि भारत को नीति स्वायत्तता बनाए रखते हुए तथा वैश्विक पूंजी प्रवाह को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करते हुए अपनी आर्थिक वृद्धि को सुरक्षित रखना चाहिए।डॉ नागेश्वरन ने भारतीय उद्योग परिषद (सीआईआई) के वित्तपोषण 3.0 शिखर सम्मेलन में 'क्या भारत का वित्तीय क्षेत्र हमारे देश की सतत दोहरे अंकों की वृद्धि का समर्थन करे के लिए तैयार है' विषय पर उद्घाटन सत्र के यह बात कही। उन्होंने कहा कि मामूली चालू खाता घाटे के साथ, भारत वैश्विक पूंजी प्रवाह पर निर्भर करता है, लेकिन भारत में वैश्विक आर्थिक विकास की सबसे उज्ज्वल संभावनाओं में से एक है। इस गति को बनाए रखना और अपने लिए नीतिगत स्थान बनाने में इसका लाभ उठाना हम पर निर्भर है।डॉ. नागेश्वरन ने कहा कि वित्तीयकरण की घटना, जो सकल घरेलू उत्पाद के सापेक्ष बाजार पूंजीकरण के उच्च स्तर की विशेषता है, बाजार की अपेक्षाओं और प्रवृत्तियों पर असंतुल ध्यान केंद्रित करती है जो व्यापक आर्थिक परिणामों और नीतिगत चर्चा को विकृत कर सकती है।

अफगानिस्तान की राजधानी काबुल में आत्मघाती हमला, 6 लोगों की मौत

इस्लामाबाद। अफगानिस्तान की राजधानी काबुल के पास सोमवार को एक आत्मघाती हमले में कम से कम छह लोगों की मौत हो गई और 13 अन्य घायल हो गए। पुलिस ने यह जानकारी दी। काबुल के पुलिस प्रमुख के प्रवक्ता खालिद जादरान ने बताया कि विस्फोट काबुल के दक्षिण-पश्चिमी काला बलिख्यार इलाके में हुआ। उन्होंने बताया कि मृतकों में एक महिला भी शामिल है, जबकि 13 लोग घायल हुए हैं। घायलों को अस्पताल ले जाया गया है। पुलिस घटना की जांच कर रही है और अभी तक किसी ने घटना की जिम्मेदारी नहीं ली है। काबुल पुलिस के प्रवक्ता खालिद जादरान ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म झ् पर लिखा, आज दोपहर एक व्यक्ति अपने शरीर विस्फोटक बांधकर विस्फोट कर दिया। दुर्भाग्य से एक महिला समेत छह नागरिक मारे गए और 13 अन्य घायल हो गए।

मिथिबाई क्षितिज ने पंचजान्या मार्शल आर्ट अकादमी के सहयोग से एक आत्मरक्षा कार्यशाला की मेजबानी की

मुंबई (अमृत इंडिया)।

आत्मरक्षा कार्यशाला का आयोजन लड़कियों को कई तरीकों से सशक्त बनाने के लिए किया गया था। सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, प्रतिभागियों को पंचजान्या मार्शल आर्ट अकादमी से कुशल प्रशिक्षकों द्वारा विभिन्न प्रकार की आत्मरक्षा रणनीतियाँ सिखाई गईं। इन तकनीकों में रक्षात्मक चालें, भागने की रणनीतियाँ और परिस्थिति की जागरूकता शामिल थीं, जिसका उद्देश्य लड़कियों को किसी भी चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में खुद को बचाने के लिए सक्षम बनाना था। इस आयोजन ने बड़ी संख्या में लड़कियों को महत्वपूर्ण आत्मरक्षा तकनीकों को सीखने और अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा को बढ़ाने के लिए आकर्षित किया। भौतिक पहलू से परे, कार्यशाला ने मनोवैज्ञानिक सशक्तिकरण पर भी ध्यान केंद्रित किया। प्रतिभागियों को उनकी आंतरिक शक्ति को



गले लगाने, डर को दूर करने और आत्मविश्वास का निर्माण करने के लिए प्रोत्साहित किया गया। प्रशिक्षकों ने जोर दिया कि आत्मरक्षा केवल शारीरिक क्षमताओं के बारे में नहीं है, बल्कि मानसिक तैयारी और आत्मविश्वास के बारे में भी है, जो महत्वपूर्ण क्षणों में निर्णायक रूप से कार्य करने की क्षमता प्रदान करती है।

मिथिबाई कॉलेज की प्राचार्या प्रोफेसर कृतिका देसाई ने भी कार्यशाला पर अपने विचार

कृष्ण कुंज में गुरुवार को होगा भजन संध्या का आयोजन



जयपुर। राजधानी के कालवाड़ रोड स्थित कृष्ण कुंज विलाज में पांच सितम्बर, गुरुवार को रात्रि साढ़े सात बजे से भक्ति रस से ओतप्रोत भजन संध्या सहित कई धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जायेगा। रतनगढ़ नगर पालिका अध्यक्ष अर्चना सारस्वत ने बताया कि कृष्ण कुंज निवासियों की ओर से आयोजित भजन संध्या संत श्री निवृत्तिनाथ कृष्णा, पीठाधीश्वर प्रणवाश्रम गनेड़ी सीकर के सानिध्य में होगी। भजन संध्या में

बिसाऊ विकास मंडल समिति जयपुर, रंग रसिया सांस्कृतिक मंडल जयपुर और आराधना म्यूजिकल आर्ट एंड कल्चर ग्रुप, जयपुर के प्रसिद्ध कलाकार और गायक गीत और संगीत के साथ अपनी प्रस्तुति देंगे। सामाजिक कार्यकर्ता हेमंत सारस्वत ने बताया कि कार्यक्रम के लिए पदाधिकारियों की ओर से आयोजित भजन संध्या संत श्री निवृत्तिनाथ कृष्णा, पीठाधीश्वर प्रणवाश्रम गनेड़ी सीकर के सानिध्य में होगी। भजन संध्या में

भाजपा एनएचआरसी से झारखंड में भर्ती अभियान के दौरान मौतों की जांच का अनुरोध करेगी : सरमा

रांची/एजेंसी।

असम के मुख्यमंत्री हिमंत विश्व शर्मा ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग (एनएचआरसी) से झारखंड में भर्ती अभियान के दौरान अभ्यर्थियों की मौत की जांच करने का अनुरोध करेगी। शर्मा ने दावा किया कि झारखंड में 'अत्यधिक गर्मी' के कारण आबकारी कांस्टेबल पद के लिए एनएचआरसी से अभ्यर्थियों की मौत की जांच करने का आग्रह करेगी। हेमंत सोरेन सरकार को जाण गंवाने वाले प्रत्येक अभ्यर्थी के परिजन को 50 लाख रुपये और एक नौकरी प्रदान करनी चाहिए। झारखंड पुलिस के मुताबिक, अब तक 12 अभ्यर्थियों की मौत की खबर है, जबकि राज्य के स्वास्थ्य मंत्री



बन्ना गुप्ता ने मृतकों की संख्या चार बताई है। शर्मा ने कहा, "भाजपा एनएचआरसी से अभ्यर्थियों की मौत की जांच करने का आग्रह करेगी। हेमंत सोरेन सरकार को जाण गंवाने वाले प्रत्येक अभ्यर्थी के परिजन को 50 लाख रुपये और एक नौकरी प्रदान करनी चाहिए। यदि वे ऐसा करने में विफल रहते हैं, तो भाजपा (राज्य) सला में आने के बाद उनके

परिवार के सदस्यों को नौकरियां प्रदान करेगी।" झारखंड में इसी साल विधानसभा चुनाव होने हैं। उन्होंने यह भी घोषणा की कि भाजपा पीड़ितों के परिवार को सदस्यों को एक-एक लाख रुपये देगी। झारखंड में आबकारी कांस्टेबल भर्ती के लिए शारीरिक दक्षता परीक्षा 22 अगस्त को छह जिलों के सात केंद्रों पर शुरू हुई जो नौ सितंबर तक चलेगी।

सुरक्षित ट्रेन परिचालन को लेकर रेल कर्मचारियों के उन्नत ज्ञान के लिए वर्चुअल रियलिटी और मिक्सड रियलिटी प्रशिक्षण मॉड्यूल

मालीगांव। संरक्षा संबंधी पहलुओं पर रेल कर्मचारियों के ज्ञान को बेहतर करने के लिए, पूर्वोत्तर सीमा रेलवे ने अपने बहु-विषयक क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थान (एमडीजेडटीआई), अलीपुरद्वार में एक अभिनव वर्चुअल रियलिटी एंड मिक्सड रियलिटी (वीआर और एमआर) प्रशिक्षण मॉड्यूल लागू किया है। भारतीय रेल मॉड्यूल के सॉफ्ट स्किल प्रशिक्षण के लिए यह डिजिटल हब ट्रेनपरिचालन से जुड़े सभी रनिंग और संरक्षा कर्मचारियों के लिए तैयार किया गया है। प्रशिक्षुओं को हेडसेट और जॉयस्टिक के उपयोग के साथ संबंधित कार्य प्रकृति पर एक व्यापक ट्यूटोरियल मार्गदर्शन प्रदान किया जा सकता है। इससे पहले, प्रशिक्षण दो चरणों अर्थात सैद्धांतिक और व्यावहारिक रूप में थे,जिसके लिए कक्षा शिक्षणऔर



व्यावहारिक सत्र आयोजित किए जाते थे। हालांकि, तकनीकी प्रगति और वीआरएवं एमआर प्रशिक्षण मॉड्यूल की शुरुआत के साथ, वास्तविक समय का अनुभव प्राप्त किया जा सकता है।

इस उन्नत मॉड्यूल ने वास्तविक समय की स्थिति में मानक मापदंडों तक पहुंच में सुधार करने में भी मदद की। अब

तक कुल 2020 प्रशिक्षुओं यानी 516 स्टेशन प्रबंधकों, 372 ट्रेन प्रबंधकों, 555 लोको पायलट, 550 सहायक लोको पायलट और पी. वे के 27 जूनियर इंजीनियरों/वरिष्ठ सेक्शन इंजीनियरों को इस वीआर एवं एमआर मॉड्यूल के तहत सफलतापूर्वक प्रशिक्षण दिया गया है। उन्नत प्रशिक्षण प्रथाओं के लिए वर्चुअलरियलिटी एंडमिक्सड

करती हैं। जब तक आप मिथिबाई कॉलेज से स्नातक हो जाते हैं, तब तक हम आशा करते हैं कि आप आत्मविश्वास से चुनौतियों को संभालने के लिए तैयार होंगे। पिछले शैक्षणिक वर्ष में हमने आत्मरक्षा पर एक कोर्स आयोजित किया था, और इसी तरह, इस वर्ष भी सह-पाठ्यक्रम के रूप में आत्मरक्षा की योजना बना रहे हैं। हम आगे भी ऐसे कार्यशालाओं का आयोजन करने के लिए तत्पर हैं, जो हमारे छात्रों को मजबूत बनाने और उनके व्यक्तिगत सशक्तिकरण को बढ़ाने का कार्य करें। पंचजान्या मार्शल आर्ट्स अकादमी के एक प्रतिनिधि ने जोर देते हुए कहा, सशक्तिकरण के लिए खुद को बचाने की क्षमता महत्वपूर्ण है। हमारा लक्ष्य प्रतिभागियों के आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने के साथ-साथ उन्हें व्यावहारिक आत्मरक्षा उपकरण प्रदान करना था। हमें इस पहल में योगदान देने पर गर्व है।

ओडिशा के अधिकारियों को बांग्लादेशी घुसपैठियों की पहचान करने को कहा गया : सीएम माझी

भुवनेश्वर/एजेंसी।

ओडिशा के मुख्यमंत्री मोहन चरण माझी ने विधानसभा में कहा कि उनकी सरकार ने सभी जिलाधिकारियों और पुलिस अधीक्षकों को बांग्लादेशी घुसपैठियों की पहचान करने का निर्देश दिया है। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के विधायक भास्कर मधेई के सवाल के लिखित उत्तर में माझी ने कहा कि विभिन्न स्थानों, विशेषकर केन्द्रापाड़ा जिले में, जहां कथित तौर पर अधिकांश «अवैध प्रवासियों» के रहने की बात कही गई है, में घुसपैठियों की पहचान करने के लिए तहसीलों, प्रखंडों और पुलिस थानों के अधिकारियों की समितियां गठित करने का निर्देश जारी किया गया है। विधानसभा में दिए गए एक अन्य बयान में मुख्यमंत्री ने कहा कि वर्ष 2021 तक कुल 3,740 बांग्लादेशी



घुसपैठिए राज्य में अवैध रूप से रह रहे थे। उन्होंने बताया कि इन अवैध घुसपैठियों में 1,649 केंद्रापाड़ा जिले में, 1,112 जगतसिंहपुर में, 655 मल्कानगिरी में, 199 भद्रक में, 106 नबरंगपुर में, 17 लोग खुर्दा जिले में और दो व्यक्ति बाराह जिले में रहते हैं। माझी ने विधानसभा को बताया कि उन्हें वापस उनके देश भेजने का प्रस्ताव सरकार के विचारधीन है। मुख्यमंत्री के मुताबिक बांग्लादेश की

सांप के काटने से किशोरी की हुई दर्दनाक मौत

इटावा। सैफई उपखंड के महाराजपुर गांव में घर पर ही एक कमरे में सांप के काटने से किशोरी की दर्दनाक मौत का मामला सामने आया हैं। मामला बीते 19 अगस्त (रक्षाबंधन) के दिन का है। मृतक किशोरी की बहन ने बोला बिटिया नहा लो जाके बस उसी समय जैसे ही कमरे मे कपड़े लेने के लिए गई उसी समय बाया पर के अंगूठे के बगल की उंगली छेद पर रख गयी उसे नहीं पता था की उसके पर के नीचे छेद है और उसमे सर्प था जिसने अचानक युवती को जहरीले सांट ने काट लिया जब उसने शोर मचाया की मुझे किसी ने काट लिया और उसने बोला मुझे कुछ दिखाई नहीं दे रहा उसी समय उसका भाई कुलदीप यादव सहित परिवारीजन युवती को आनन फानन में जेके हॉस्पिटल इटावा लेकर पहुंचे जहां डॉक्टरों ने युवती को मृत्यु घोषित कर दिया। उसके बाद परिवारीजन उसे घर ले गये वहा 112 बाली पुलिस पंचनामा भर के चली गयी



मृतका की फाइल फोटो

युवती की बड़ी बहिन के कपड़ो मे जाकर बैठ गया था उसी कमरे में पकड़ा गया। मृतक फूलमाला सुपुत्री सुरेशचंद्र यादव की उम्र लगभग 18 वर्ष के के आसपास थी। युवती की अचानक मृत्यु पर पवित्रारीजनों का रो-रोकर बुरा हाल है।

कि गृह मंत्रालय द्वारा उपलब्ध कराई गई राष्ट्रीय जनसंख्या रजिस्टर कार्ड रिडर मशीन का इस्तेमाल भारतीय और विदेशी नागरिकों की पहचान के लिए किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि इसके अलावा, ओडिशा के सभी तटीय जिलों के पुलिस अधीक्षकों को सतर्क रहने और बांग्लादेशी घुसपैठियों को रोकने के लिए जलमार्गों पर गश्त बढ़ाने के निर्देश

दिये गए हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य पुलिस शाखा ने भी अपने अधिकारियों को मछुआरों के संघटनों और मछली पकड़ने वाली नौकाओं के मालिकों के निकायों के संपर्क में रहने के निर्देश दिए हैं ताकि घुसपैठियों के बारे में जानकारी एकत्र की जा सके। उन्होंने बताया कि राज्य में कुल 18 समुद्री सीमा पर सक्रिय हैं और केंद्रीय योजना के तहत पुलिस को 15 हाई-स्पीड इंटरसेप्टर नौकाएं दी गई हैं।

16 साल के हर्ष केडिया ने 2,175 से अधिक श्रमिकों को दृष्टि समर्थन प्रदान किया

नई दिल्ली। सिर्फ 16 साल की उम्र में, द श्रीराम मिलेनियम स्कूल, नोएडा के 11वीं कक्षा के छात्र, हर्ष केडिया, अपनी पहल, आई केयर इकालिटी के माध्यम से दिल्ली, हरियाणा, उत्तर प्रदेश और राजस्थान के चार राज्यों में ब्लू कॉलर वर्कर्स पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाल रहे हैं। हर्ष ने अपने पिता के साथ फैक्ट्रियों और निर्माण स्थलों पर जाने के दौरान ब्लू कॉलर वर्कर्स द्वारा सामना की गई कठिनाइयों से प्रेरित होकर सितंबर 2023 में इस गैर-लाभकारी संस्था की स्थापना की। उनका उद्देश्य इन श्रमिकों की उपेक्षित आंखों की देखभाल की जरूरतों को पूरा करना है। हर्ष ने TEDxYouth@TheShriramMillenniumNoida पर अपने सफर और आई केयर इकालिटी के मिशन को सांझा किया। आई केयर इकालिटी मुफ्त



दृष्टि परिक्षण, निदान और चिकित्सात्मक उपाय प्रदान करता है, जिसमें पढ़ने के चश्मे और आई ड्रॉप शामिल हैं। यह 15 से अधिक हाई स्कूल वॉलंटियर और ख चैरिटेबल ट्रस्ट के योग्य डॉक्टरों की एक समर्पित टीम के समर्थन से संचालित होता है। इस पहल ने 2,175 श्रमिकों के लिए दृष्टि परीक्षण किए हैं, 778 पढ़ने के चश्मे और 425 आई ड्रॉप वितरित

हरियाणा टूरिज्म डे पर संतावना पुरस्कार में प्रथम आई सृष्टि

फरीदाबाद। हरियाणा टूरिज्म डे पर संतावना पुरस्कार में प्रथम आई सृष्टि। आज हरियाणा टूरिज्म डे पर आयोजित हुई चित्रकला प्रतियोगिता में सृष्टि ने संतावना पुरस्कार में प्रथम स्थान हासिल किया। होटल मैगापाई सेक्टर 16 फरीदाबाद में आयोजित किए गए हरियाणा टूरिज्म डे पर भव्य रूप में सभी बच्चों के लिए पेंटिंग और रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस अवसर पर बंसी विद्या निकेतन स्कूल, सेंट जॉन स्कूल, राहुल कॉन्वेंट, राहुल पब्लिक स्कूल आदि सभी स्कूलों के विद्यार्थी उपस्थित रहे। सृष्टि अपने विद्यालय डी सी मॉडल सीनियर सेकंडरी स्कूल से इस प्रतियोगिता में भाग लेने वाली अकेली प्रतिभागी बनी। अनोखी बात यह भी रही इस प्रतियोगिता में सृष्टि गुलाटी सबसे छोटी छात्रा के रूप में उपस्थित रही। यह पहला अवसर है जब सृष्टि हरियाणा

टूरिज्म डे पर अयोजित किसी भी प्रतियोगिता में सांवना पुरस्कार में प्रथम आई। पिता प्रवीन ने कहा है पुरस्कार प्रथम हो या तृतीय या सांवना किसी भी रूप में हो बच्चे ने अच्छ प्रदर्शन किया यह मायने



रखता है। सृष्टि ने अपने विद्यालय का प्रतिनिधित्व किया यह बड़ी गर्व की बात है। स्कूली छात्रों के लिए आयोजित इस प्रतियोगिता का उद्देश्य छात्रों को हरियाणा के पर्यटन धरोहर के बारे में जानकारी देना और जागरूक करना था।

आरएसएस के सम्मेलन में महिलाओं के लिए शीघ्र न्याय की मांग

पलक्कड़। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के एक राष्ट्रीय समन्वय सम्मेलन में पश्चिम बंगाल में एक महिला चिकित्सक के साथ कथित दुष्कर्म और फिर उसकी हत्या की घटना की निंदा की गई तथा इसे ‘बेहद दुर्भाग्यपूर्ण’ करार दिया गया। संघ के अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख सुनील आंबेकर ने सोमवार को यह जानकारी दी। तीन दिन तक चली समन्वय बैठक के समापन के बाद एक संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए आंबेकर ने कहा कि अत्याचारों का शिकार होने वाली महिलाओं को त्वरित न्याय दिलाने के लिए कानूनों और दंडात्मक कार्रवाइयों की समीक्षा करने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि बैठक में कोलकाता की घटना को लेकर विस्तार से चर्चा की गई। आंबेकर ने कहा कि यह एक “बेहद दुर्भाग्यपूर्ण घटना” उन्होंने कहा कि बैठक में सरकार की भूमिका, आधिकारिक तंत्र, कानून, दंडनीय कार्रवाइयां और प्रक्रियाओं पर चर्चा हुई। आंबेकर ने कहा, “उनका मानना है कि इन सभी पर दोबारा विचार करने की जरूरत है ताकि हमारे पास उचित प्रक्रिया, फास्ट-ट्रैक प्रक्रियाएं उपलब्ध हों और हम पीड़ित के लिए न्याय सुनिश्चित कर सकें।” आरजी कर मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल के संगोष्ठी कक्ष में नौ अगस्त को परास्नातक प्रशिक्षु चिकित्सक का शव बरामद किया गया था और चिकित्सक के साथ कथित दुष्कर्म तथा हत्या के सिलसिले में एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया गया था।

उत्तराखंड के चमोली में बदरीनाथ राष्ट्रीय राजमार्ग भूस्खलन के चलते बंद

गोपेश्वर। उत्तराखंड के चमोली जिले में बदरीनाथ राष्ट्रीय राजमार्ग भारी बारिश के कारण कई जगह भूस्खलन के चलते बंद हो गया है। बारिश के कारण कर्णप्रयाग- ग्वालदम राष्ट्रीय राजमार्ग समेत सीमा को जोड़ने वाली ज्योतिर्मठ- मलारी सड़क भी भूस्खलन के कारण अवरुद्ध है। चमोली जिला आपदा प्रबंधन केंद्र से मिली जानकारी के मुताबिक, कर्णप्रयाग-ग्वालदम राष्ट्रीय राजमार्ग पर सिमली में जोसा और टोटा गधेरे (बसाती नाले) में भूकटाव से बाजार में कई घर और दुकानें क्षतिग्रस्त हो गई हैं। गधेरे का मलबा राजमार्ग पर भी फैल गया जिसे अब साफ कर दिया गया है। बदरीनाथ राष्ट्रीय राजमार्ग पागलनाला, पातालगंगा, नंदप्रयाग में अवरुद्ध है जिसे खोलने के लिए मशीनों के साथ कर्मचारों मौके पर पहुंच गए हैं।

जम्मू में सैन्य शिविर पर संदिग्ध आतंकवादी हमले में सेना का जवान गंभीर रूप से घायल

जम्मू। जम्मू में सोमवार को एक सैन्य शिविर की संतरी चौकी पर संदिग्ध आतंकवादियों द्वारा की गई गोलीबारी में सेना का एक जवान गंभीर रूप से घायल हो गया। हमलावरों का पता लगाने और उनका खान्सा करने के लिए व्यापक तलाशी अभियान जारी है। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। रक्षा विभाग के प्रवक्ता ने बताया कि सुबह करीब 10 बजकर 50 मिनट पर जम्मू के बाहरी इलाके में स्थित सुंजवान सैन्य स्टेशन पर कुछ राउंड गोलीबारी हुई। घटना में एक सैनिक गंभीर रूप से घायल हो गया। प्रवक्ता ने संतरी चौकी पर गोलीबारी करने वाले हमलावरों के बारे में विस्तृत जानकारी दिए बौर बताया कि हमलावरों को पकड़ने के लिए अभियान शुरू किया गया हैऔर फरार आतंकवादियों को पकड़ने के लिए स्थानीय पुलिस के विशेष अभियान समूह (एसओजी) ने सेना के साथ मिलकर तलाश अभियान शुरू किया। अधिकारियों ने कहा कि तलाश अभियान जारी है लेकिन आतंकवादियों से अब तक सामना नहीं हुआ है। इससे पहले फरवरी 2018 में आतंकवादियों ने सुंजवान सैन्य शिविर पर हमला किया था। इस घटना में तीन सैनिक शहीद हो गए थे और एक नागरिक की मौत हो गई थी। वहीं घटना में तीन आतंकवादियों को मार गिराया गया था।

ए जे सी बोस फ्लाईओवर पर दो वाहनों की टक्कर, नौ लोग घायल

कोलकाता। कोलकाता के ए जे सी बोस फ्लाईओवर पर सोमवार को दो वाहनों की टक्कर में नौ लोग घायल हो गए। पुलिस ने यह जानकारी दी। पुलिस के एक अधिकारी ने बताया कि यह दुर्घटना उस समय हुई जब एक निजी वाहन प्रवेश निषेध क्षेत्र से ए जे सी बोस फ्लाईओवर में प्रवेश कर गया और आईटी फेशेवरों को ले जा रहे एक अन्य वाहन से उसकी टक्कर हो गई। उन्होंने बताया, “दोनों वाहनों को जब्त कर लिया गया है और घायलों का एसएसकेएम अस्पताल में उपचार किया जा रहा है। हम मामले की जांच कर रहे हैं।” अधिकारी ने बताया कि पुलिस यह भी पता लगाने के कोशिश कर रही है कि ए जे सी बोस फ्लाईओवर पर प्रवेश निषेध क्षेत्र से घुसने वाले निजी वाहन का चालक नशे में तो नहीं था।

तेलंगाना सरकार ने भारी बारिश के बीच राहत कार्या को और तेज किया

हैदराबाद। तेलंगाना सरकार ने सोमवार को राज्य में भारी बारिश के बाद राहत उपाय कार्य तेज कर दिए हैं। यहां भारी बारिश के कारण कम से कम नौ लोगों की मौत हो गई है और निचले इलाकों में जल भराव हुआ है। प्रभावित लोगों को राज्य में कुछ स्थानों पर राहत शिविरों में ले जाया गया है। मुख्यमंत्री ए. रेवंत रेड्डी बारिश से उत्पन्न हालात तथा राहत उपायों पर अधिकारियों के साथ बैठक करेंगे। राज्य में कई स्थानों पर लोग बारिश से बेहाल हैं, हालांकि सोमवार की सुबह बारिश में कुछ कमी आई है। खम्मम में बाढ़ पीड़ितों ने बताया कि मुनेरू नदी के उफान पर है तथा बाढ़ के पानी में उनका सामान बह गया। उन्होंने कहा कि अब उन्हें पीने का पानी भी उपलब्ध नहीं है। उन्होंने बताया कि रिवकार को कुछ स्थानीय लोगों ने उन्हें भोजन मुहैया कराया। सिकंदराबाद मुख्यालय वाले दक्षिण मध्य रेलवे ने ट्रेन सेवाएं रद्द कर दीं, जबकि कुछ अन्य का मार्ग परिवर्तित कर दिया है। भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) के मौसम केंद्र ने कहा कि सोमवार को आदिलाबाद जिले में अलग-अलग स्थानों पर अत्यधिक भारी वर्षा होने की संभावना है। भारी बारिश के मद्देनजर, साइबराबाद पुलिस ने सभी आईटी और आईटीईएस कंपनियों से दो सितंबर को अपने कर्मचारियों को ‘वर्क फ्रॉम होम’ की सुविधा देने का अनुरोध किया है।

असम में 30 करोड़ रुपये की कीमत का मादक पदार्थ जब्त, तीन तस्कर गिरफ्तार

गुवाहाटी। असम के कछार जिले में मादक पदार्थ की एक बड़ी खेप में करीब 30 करोड़ रुपये की कीमत की ‘याबा’ गोलिएं जब्त की गईं और तीन तस्करों को गिरफ्तार किया गया। अधिकारियों ने सोमवार को यह जानकारी दी। करीमगंज पुलिस अधीक्षक पार्थ प्रोतिम दास के अनुसार, मादक पदार्थों की तस्करी के संबंध में सूचना मिलने के बाद पुलिस ने रिववार रात बदरपुर थाना क्षेत्र के जलारपुर इलाके में अभियान चलाया। उन्होंने कहा, “एक वाहन को रोका गया और वाहन में बनी एक गुप्त जगह से ‘याबा’ की एक लाख गोलिएं बरामद की गईं। इन्हें मिजोरम से लाया जा रहा था।” दास ने बताया कि पुलिस ने तीन लोगों को गिरफ्तार किया है जो कछार के कटगौराह पुलिस थाना क्षेत्र के रहने वाले हैं। उन्होंने बताया कि जब्त किए गए मादक पदार्थ की कीमत लगभग 30 करोड़ रुपये आंकी गई है। मुख्यमंत्री हिमंत विश्व शर्मा ने सोशल मीडिया मंच ‘एक्स’ पर एक पोस्ट में राज्य को नशा मुक्त बनाने में असम पुलिस के प्रयासों की सराहना की। याबा उत्तेजक पदार्थों का एक संयोजन है, जिसमें मेथाम्फेटामाइन और कैफीन होती है। ‘क्रेजी मेडिसिन’, ‘मैडेनस ड्रग’ या ‘नाजी स्पीड’ जैसे इसके कई उपनाम हैं।

दंगाइयों के सामने नाक रगड़ते थे जाति की राजनीति करने वाले: सीएम योगी

मुरादाबाद/एजेंसी।

कांग्रेस और समाजवादी पार्टी (सपा) पर तुष्टिकरण की राजनीति करने का आरोप दोहराते हुये मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि ये दल जाति, मत और मजहब के नाम पर देश और प्रदेश के सामाजिक ताने बाने को छिन भिन्न करते हैं। उन्होंने लोगों से विभाजनकारी ताकतों से सावधान रहने की अपील करते हुए कहा कि जाति के नाम पर समाज को बांटने वाले लोग 2017 के पहले दंगाइयों के सामने घुटने टेकते और नाक रगड़ते थे। योगी ने कहा कि विगत साढ़े सात वर्ष में उत्तर प्रदेश ने विकास के नए आयामों को छुआ है। 2017 के पहले इस उत्तर प्रदेश का सीडी रेश्यो 44 फीसदी था, जो आज बढ़कर 60 फीसदी तक जा चुका है, जिसे हमें 65 फीसदी तक ले जाना है।

फसल हानि और कीमतों को स्थिर करने के लिए भंडारण क्षमता बढ़ाने की जरूरत: टाकुर

नई दिल्ली। केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री रामनाथ ठाकुर ने विभिन्न मौसम के दौरान फसल कटाई के बाद होने वाले नुकसान को कम करने और कीमतों में उतार-चढ़ाव की रोकथाम के लिए भंडारण बुनियादी ढांचे को बढ़ाने की आवश्यकता पर बल दिया है। श्री ठाकुर ने सोमवार को यहां सब्जी क्लस्टर, बागवानी क्लस्टर और मूल्य श्रृंखला विकास पर आयोजित एक पारमर्श बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि किसान संगठनों (एफपीओ) के माध्यम से छोटे किसानों को समर्थन देने और ऐसे क्लस्टर बनाये जाने चाहिए जो आवश्यक बुनियादी ढांचे और बाजार तक पहुंच प्रदान करते हैं। इससे दीर्घकालिक स्थिरता और जमीनी स्तर पर प्रभाव सुनिश्चित होता है।

उन्होंने फसल कटाई के बाद हानि कम करने और विभिन्न मौसमों के दौरान कीमतों में उतार-चढ़ाव को रोकने के लिए भंडारण बुनियादी



आर्यभट्ट इंटरनेशनल स्कूल में जनपद स्तरीय वृहद रोजगार एवं ऋण मेला के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुये श्री योगी ने 175.50 करोड़ रुपए का ऋण वितरित किए तथा 2,500 युवाओं को टैबलेट भी वितरित किया। इसके अलावा उन्होंने 401 करोड़ रुपए की 292 विकास परियोजनाओं

फसल हानि और कीमतों को स्थिर करने के लिए भंडारण क्षमता बढ़ाने की जरूरत: टाकुर



ढांचे को बढ़ाने की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि देश के विभिन्न हिस्सों में एक ही उपज के लिए कीमतों में अंतर का सामना करना पड़ता है, जो एक बड़ी समस्या है। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि बच्चों में कुपोषण की राष्ट्रव्यापी समस्या का मुकाबला करने के लिए मुख्य ध्यान इस पर होना चाहिए कि ‘कोई भी बच्चा फलों और सब्जियों तक पहुंच से वंचित नहीं रहे’। इस कार्यक्रम में भारतीय कृषि के भविष्य पर विचार-विमर्श करने के लिए किसान समूहों, सरकारी एजेंसियों, मंत्रालयों, स्टार्ट-अप और निजी क्षेत्र के खिलाड़ियों सहित विभिन्न पक्षों को एक साथ लाया गया।

मसाई स्कूल डेवलपर बनने की चाह रखने वाले तीन लोगों के करियर में लेकर आया बदलाव

नई दिल्ली। मसाई स्कूल एक ऐसा मंच है, जहाँ कौशल का संयोजन अवसरों से किया जाता है। इस स्कूल ने भारत में 5000 से अधिक विद्यार्थियों के सपने पूरे करने में सफलता पाई है। नतीजे देने वाले एक करियर इंस्टीट्यूट के रूप में काम करते हुए, इसने 100 से ज्यादा बच्चे को प्रशिक्षित किया है और बीते वर्षों में अपना दायरा बढ़ाते हुए, अभी 6,000 से अधिक एनरोलमेंट्स हासिल कर लिये हैं। इसी महीने यह संस्थान अपने पाँच साल पूरे कर रहा है और अपने एकमात्र लक्ष्य की प्राप्ति भी सुनिश्चित कर चुका है। इसका लक्ष्य शिक्षा प्रणाली को नतीजों पर आधारित बनाकर भारत की मानवीय क्षमता को सामने लाना है। सुधांशु शर्मा वैसस्पर्ट्स में एक सॉफ्टवेयर डेवलपर हैं। वह दिल्ली में अपने बचपन के दिनों को याद



करते हैं, जब 14 साल की उम्र में उनके पिता की दुखद मृत्यु हो गई थी। उन्होंने जीवन में जल्दी ही जिम्मेदारियाँ संभालना शुरू कर दिया था। अपनी पढ़ाई जारी रखते हुए, सुधांशु को आईटी और डेवलपमेंट में काफी रुचि रहने लगी। मसाई से पहले उन्होंने यूट्यूब जैसे मुफ्त संसाधनों पर भरोसा किया। टेक्नोलॉजी की समझ का उन्होंने एक ठोस आधार बनाया और आखिरकार एक ऑनलाइन एड के जरिये उन्हें मसाई स्कूल के बारे में

पता चला। मसाई में सुधांशु को अपने ही द्वारा सीखी गई कुशलताओं का फायदा मिला, लेकिन नई टेक्नोलॉजीज में उन्हें मुश्किलें आईं। अच्छी बात यह रही कि ग्लाइड प्रोग्राम के स्टाइपेंड ने उनके आर्थिक बोझ को कम करने में मदद की और फिर वह मसाई के पुख्ता पाठ्यक्रम में पूरी तरह से खो गये। मसाई में अपने सफर के दौरान उनमें वेब डेवलपमेंट, ग्राफिक डिजाइन और ब्लॉकचेन टेक्नोलॉजी का जुनून पैदा हुआ।

ओमेक्स ग्रुप ने 2500 करोड़ रुपये के निवेश के साथ ओमेक्स स्टेट लॉन्च करने की घोषणा की

नई दिल्ली। भारत के अग्रणी रियल एस्टेट डेवलपर्स में से एक, ओमेक्स ग्रुप ने अपने प्रोजेक्ट ‘द ओमेक्स स्टेट’ के लॉन्च की घोषणा की है जो स्पोर्ट्स, रेटेल, हॉस्पिटैलिटी, फूड और कल्चर के लिए भारत का पहला इंटीग्रेटेड 5-इन-1 प्रोजेक्ट होगा।

द्वारका सेक्टर 19-बी, नई दिल्ली में 50.4 एकड़ में फैले इस प्रोजेक्ट को दिल्ली विकास प्राधिकरण (डीडीए) के साथ सार्वजनिक-निजी भागीदारी (पीपीपी) मॉडल के तहत विकसित किया जा रहा है। इसमें 2500 करोड़ रुपये से अधिक का निवेश किया जाएगा। 3.3 करोड़ से ज्यादा की आबादी वाली भारत की राजधानी दिल्ली को लंबे समय से एक विश्व स्तरीय क्रिकेट स्टेडियम का इंतजार है। दुनिया का दूसरा सबसे ज्यादा



आबादी वाला शहर, दिल्ली 1987 में खेले गए भारत बनाम इंग्लैंड विश्व कप सेमीफाइनल के बाद से प्रमुख विश्व कप और आईपीएल मैचों की मेजबानी करने से चूक गया है। ओमेक्स स्टेट में 30000 से ज्यादा दर्शकों की बैठने की क्षमता वाला एक विश्व स्तरीय, आधुनिक आईसीसी और फीफा के स्टेण्डर्ड वाला अंतर्राष्ट्रीय

क्रिकेट-कम-फुटबॉल स्टेडियम होगा। साथ ही इसमें एक अंतर्राष्ट्रीय मल्टी-स्पोर्ट्स इनडोर स्टेडियम भी होगा जिसमें 2000 दर्शक आसानी से बैठ सकेंगे।

यह प्रोजेक्ट लंदन के क्वीन एलिजाबेथ ओलंपिक पार्क, पेरिस में एंकोर एरिना, सिंगापुर स्पोर्ट्स हब और मेलबर्न ओलंपिक पार्क जैसे प्रतिष्ठित स्थलों के नक्शेकदम पर चलते हुए भारत के खेल और

कर चुके हैं। इसमें बीस फीसदी बेटियाँ शामिल हैं। उन्होंने कहा कि अभी कुछ दिनों पहले 60200 से अधिक पदों के लिए पुलिस भर्ती की प्रक्रिया संपन्न हुई है, जैसे ही इन्हें नियुक्ति पत्र मिल जाएगा, वैसे ही हम 40000 पदों के लिए फिर भर्ती निकालेंगे। अगले दो वर्ष में दो लाख युवाओं को सरकारी नौकरी देंगे।

साथ ही प्रदेश में आए निवेश से उत्तर प्रदेश के एक करोड़ युवाओं को नौकरी मिलेगी। उन्होंने कहा कि आज उत्तर प्रदेश देश की नंबर दो की अर्थव्यवस्था वाला राज्य बन चुका है।

अगले 3-4 वर्ष में उत्तर प्रदेश देश की नंबर एक की अर्थव्यवस्था वाला राज्य बनाने जा रहा है। जब उत्तर प्रदेश नंबर एक की अर्थव्यवस्था वाला राज्य जाएगा तो यहां की प्रति व्यक्ति आय तीन से चार गुना बढ़ जाएगी।

एपिजेनेटिक्स पर दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित केएल डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी का कैंसर निदान और उपचार में महत्वपूर्ण कदम

नई दिल्ली। केएल डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी के बायोटेक्नोलॉजी विभाग ने कैंसर के निदान और उपचार में एपिजेनेटिक्स पर दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का आयोजन भारत सरकार के साइंस एंड इंजीनियरिंग रिसर्च बोर्ड के तहत एएनआरईएफ द्वारा प्रायोजित किया गया था और इसे वड्डेक्सम परिसर में संपन्न किया गया। यह सम्मेलन एपिजेनेटिक तंत्रों के कैंसर पहचान और उपचार में बढ़ते महत्व की जांच पर केंद्रित था। प्रमुख विशेषज्ञों, शोधकर्ताओं, और छात्रों को अपने विचार साझा करने और इस महत्वपूर्ण क्षेत्र में नवीनतम विकास पर चर्चा करने का मौका मिला। जो एपिजेनेटिक्स और कैंसर की चिकित्सा के बीच के संबंध पर ध्यान केंद्रित करते हैं, और कैंसर उपचार में सटीक चिकित्सा के लिए नई दिशा दिखाते हैं। केएल डीड टू बी



यूनिवर्सिटी के चांसलर, कोनेरू सत्यनारायणा ने इस अवसर पर कहा, केएल डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी में, हम ऐसे शोध और विकास में विश्वास करते हैं जो विभिन्न क्षेत्रों में योगदान दे सके। हमारी प्रतिबद्धता केवल अकादमिक तक सीमित नहीं है; यह समाज की भलाई और स्वास्थ्य सुधार के लिए भी है। कैंसर एपिजेनेटिक्स पर यह सम्मेलन विशेषज्ञों को एक साथ लाकर कैंसर निदान और उपचार में सुधार करने के लिए काम कर रहा है। हम इस तरह की पहलों से समाज में महत्वपूर्ण

उद्धव ठाकरे के खिलाफ याचिका दायर करना शस्त्र को पड़ा भारी, बॉम्बे हाईकोर्ट ने दे दिया ये आदेश

बॉम्बे। बॉम्बे हाई कोर्ट ने शिव सेना (यूबीटी) प्रमुख उद्धव ठाकरे के खिलाफ एक तुच्छ याचिका दायर करने के लिए नादेड़ निवासी पर 2 लाख रुपये का जुर्माना लगाया है। अदालत ने याचिकाकर्ता मोहन चव्हाण को व्यक्तिगत रूप से पूर्व मुख्यमंत्री को डिमांड ड्राफ्ट के रूप में राशि सौंपने का निर्देश दिया है। दर्शनशास्त्र में डॉक्टर और बंजारा समुदाय के सदस्य, चव्हाण ने तर्क दिया कि उनकी धार्मिक भावनाओं को ठाकरे ने आहत किया था, जिन्होंने एक समारोह के दौरान उनके पुजारी द्वारा उन्हें दी गई पवित्र राख (विभूति) नहीं लगाई थी। औरंगाबाद पीठ के न्यायमूर्ति एसजी महरे ने कहा कि प्रथम दृष्ट्या कानून की कम जानकारी रखने वाला व्यक्ति भी कहगा कि यह %कानून की प्रक्रिया का दुरुपयोग या प्रसिद्ध और सेलिब्रिटी बनने के लिए न्यायिक प्रणाली का उपयोग% के अलावा कुछ नहीं है। न्यायाधीश ने 29 अगस्त को कहा कि ऐसी याचिकाएँ समाज के सम्मानित सदस्यों की छवि को खराब करती हैं। ज्यादातर समय, इस तरह की



याचिकाएं गलत उद्देश्यों से दायर की जाती हैं। यह देखते हुए कि यह कानून की प्रक्रिया का दुरुपयोग करने के लिए जुर्माना लगाने का एक उपयुक्त मामला है, अदालत ने चव्हाण को 2 लाख रुपये का जुर्माना लगाने के बाद याचिका वापस लेने की अनुमति दी। एचसी ने कहा कि यह राशि तीन महीने के भीतर ठाकरे को दी जानी है, अन्यथा कड़ी कार्रवाई की जाएगी। न्यायमूर्ति मेहरे ने कहा, ंयाचिकाकर्ता (चव्हाण) को पूर्व मुख्यमंत्री उद्धव बालासाहेब ठाकरे के नाम पर एक डीडी (डिमांड ड्राफ्ट) खरीदना चाहिए, व्यक्तिगत रूप से उनके घर जाना चाहिए और इसे उनके हाथ या उस व्यक्ति को सौंपना चाहिए।

राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित

साथरी वर्मा, वाइस चांसलर और डॉ. एन. बुचि नायडू, डायरेक्टर, केएल स्कूल ऑफ लाइफ साइंसेज ने अपने कीनोट्स दिए। उन्होंने कैंसर देखभाल में एपिजेनेटिक्स की क्रांतिकारी संभावनाओं और इसे विशेष चिकित्सा बनाने में इसके महत्व को उजागर किया। सम्मेलन ने प्रतिभागियों को उद्योग विशेषज्ञों से नेटवर्किंग, बातचीत और सीखने का अनूद्य अवसर प्रदान किया, जिससे अकादमिक उत्कृष्टता और नवाचार को बढ़ावा मिला। डॉ. वी. प्रवीण कुमार और डॉ. एम. जनाकी रामैया के नेतृत्व में, विश्वविद्यालय के अधिकारी, फैकल्टी, और स्टाफ ने सम्मेलन को सफलतापूर्वक आयोजित किया। विश्वविद्यालय ऐसे सम्मेलन नियमित रूप से करता है ताकि रिसर्च और इलाज के बीच के अंतर को कम किया जा सके और कैंसर की पहचान और इलाज में सुधार हो सके।

संत आशाराम जी बापू को शीघ्र रिहा किया जाए : राजवीर राठौर सनातन धर्म रक्षा संघ

नई दिल्ली। आज दिल्ली संसद मार्ग पर अखिल भारत हिंदू महासभा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मुन्ना कुमार शर्मा ,दरा सेना अध्यक्षश्री मुकेश जैन, सनातन धर्म रक्षा संघ आदि हिंदू संगठनों द्वारा स्वामी बालयोगेश्वर निरंजनी अखाड़ा की अध्यक्षता में 31 अगस्त को अन्याय दिवस के रूप में धरना प्रदर्शन का आयोजित किया गया। संत राधाकांत वत्स निम्बार्क सम्प्रदाय ने कहा कि संत आशाराम जी बापू के मामले में एफआईआर में कहीं भी बलात्कार शब्द नहीं है तो धारा 376 कैसे लगाई गई। बलात्कार का आरोप लगाने वाली लड़की की मेडिकल रिपोर्ट में लड़की कुंवारी पाई गई है तो संत आशाराम जी बापू की गिरफ्तारी कैसे हुई? केवल हिंदू संतो को निशाना बनाया जा रहा हैं धार्मिक भेदभाव कर रहे हैं, धर्मांतरण करने वाली शक्तियों के

रास्ते में संत आशाराम जी बापू रुकावट बन गए थे इसलिए उनको झूठ मामला बनाकर फंसाया गया है। 86 वर्षीय निर्दोष संत को बिना सबूत जेल में डालकर 11 वर्षों से

क्रोध में राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, गृह मंत्री,सर्वोच्च न्यायाधीश को ज्ञापन दिया जिसमे निर्दोष संत आशाराम जी बापू की रिहाई की मांग की गई जिससे हिंदू जनता का आक्रोश शांत किया जा सके। स्वामी बालयोगेश्वर जी ने कहा कि



प्रताड़ित किया जा रहा है उनको बीमार करके मरणामृत स्थिति में पहुंचा दिया गया है। सेशन कोर्ट के मनमाने हास्यास्पद निर्णय को चुनौती देने वाली याचिकाओं पर सुनवाई नहीं हो रही है और उन्हें एक दिन के लिए भी पैरोल या जमानत नहीं मिली। उनके साथ धार्मिक भेदभाव किया जा रहा है। हिंदू संगठनों ने बापू पर किए जा रहे हैं अन्याय के

विरोध में राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, गृह मंत्री,सर्वोच्च न्यायाधीश को ज्ञापन दिया जिसमे निर्दोष संत आशाराम जी बापू की रिहाई की मांग की गई जिससे हिंदू जनता का आक्रोश शांत किया जा सके। स्वामी बालयोगेश्वर जी ने कहा कि धर्मांतरण करने वाली राजनीतिक शक्तियों के इशारों पर कुछ लोग संत आशाराम जी बापू के साधकों को गुमराह करने के लिए बापू को जेल से छुड़ाने के नाम पर धरने प्रदर्शन आयोजित कर रहे हैं लेकिन उनका मुख्य उद्देश्य संत आशाराम जी बापू की संस्था को नुकसान पहुंचाना है और बापूजी के शिष्यों को आपस में लड़ा कर अपनी स्वार्थ पूर्ति करना है। साधकों को सावधान रहना चाहिए। संत राधाकांत वत्स जी ने कहा कि यदि संत आशाराम जी बापू को रिहा नहीं किया गया तो जनता सड़कों पर उतरेगी।

महाराष्ट्र चुनाव से पहले बीजेपी में मचेगी खलबली, शरद पवार गुट के नेता कर दिया बड़ा दावा

मुम्बई। महाराष्ट्र के पूर्व गृह मंत्री और एनसीपी-एससीपी नेता, अनिल देशमुख ने सोमवार को दावा किया कि भाजपा के कुछ वरिष्ठ नेता उनकी पार्टी के संपर्क में हैं और उनके पक्ष में शामिल होना चाह रहे हैं क्योंकि वे राज्य में मुद्दों से निपटने के सरकार के तरीके से असंतुष्ट हैं। देशमुख ने कहा कि महायुति गठबंधन उतना मजबूत नहीं है जितना होना चाहिए। उन्होंने कहा कि भाजपा के कुछ वरिष्ठ नेता हमारे पक्ष में आना चाह रहे हैं क्योंकि वे महाराष्ट्र में बेरोजगारी, मुद्रास्फीति और किसानों के संकट जैसे मुद्दों से निपटने के सरकार के तरीके से असंतुष्ट हैं। अनिल देशमुख ने यह भी कहा कि अजित पवार, एकनाथ शिंदे और बीजेपी के बीच गठबंधन उतना मजबूत नहीं है जितना होना चाहिए, और अगर ऐसा जारी रहा तो बीजेपी को एनसीपी और शिवसेना से अलग चुनाव लड़ना पड़ सकता है। इसके अलावा, कानून व्यवस्था की स्थिति पर चिंता व्यक्त करते हुए और



गृह मंत्री देवेंद्र फडनवीस पर निशाना साधते हुए, अनिल देशमुख ने कहा कि इस पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय, वह निपक्षी दलों को तोड़ने में लगे हुए हैं।उन्होंने कहा कि जब भी बदलापूर जैसी कोई घटना होती है तो लोगों में आक्रोश होता है कि दोषी को जल्द से जल्द सजा मिलनी चाहिए। आज कानून में सजा को कोई प्रावधान नहीं है। उसके लिए जब मैं गृह मंत्री था तो हमने शक्ति कानून बनाया था। इसके तहत हमने ऐसी घटनाओं पर 24 घंटे के अंदर सजा का प्रावधान किया था। उस समय हमने इसे कैबिनेट से मंजूरी दिलाई, विधानसभा और विधान परिषद से पारित करायी और अंत में केंद्र सरकार को भेजा।

पंजाब के किसानों ने चंडीगढ़ में डाला डेरा, आज करेंगे विधानसभा कूच

चंडीगढ़। पंजाब के किसान संगठनों ने चंडीगढ़ में डेरा डाल लिया। किसानों ने सोमवार दोपहर दो बजे से शुरू होने जा रहे पंजाब विधानसभा के मानसून सत्र के दौरान विधानसभा घेराव का ऐलान किया है। जिसे देखते चंडीगढ़ में ट्रैफिक रूट डायवर्ट कर दिए गए हैं और कई सेक्टरों में चल रहे निजी शिक्षण संस्थानों में छुट्टी कर दी गई है। भारतीय किसान यूनियन (एकता उग्राहं) और पंजाब खेत मजदूर यूनियन के बैनर तले किसान रविवार रात ही चंडीगढ़ के बीचोंबीच स्थित सेक्टर-34 के मैदान में एकत्र हो गए। चंडीगढ़ प्रशासन द्वारा धरना व रैलियों के लिए सेक्टर-25 का मैदान चिन्हित किया गया है। इसके बावजूद सेक्टर-34 में किसानों के पहुंचने से प्रशासन के हाथ-पांव फूल गए। सेक्टर 34 में पासपोर्ट कार्यालय के अलावा कई देशों की दूतावास के क्षेत्रीय दफ्तर तथा निजी क्षेत्र के कोचिंग सेंटर हैं। किसानों के सेक्टर 34 के मैदान में जमा होने से शहर के बीचोंबीच बसे सेक्टरों में आज सुबह से ही अफरातफरी का माहौल बन गया। किसानों के कूच को देखते हुए चंडीगढ़ तथा पंजाब की पुलिस को तैनात किया गया है। प्रशासन ने केवल 11 किसानों को विधानसभा जाने की अनुमति दी है।

हल्द्वानी दंगा के प्रमुख आरोपी अब्दुल मलिक की याचिका खारिज, डीबी करेगी सुनवाई

नैनीताल। उत्तराखंड के हल्द्वानी दंगा के प्रमुख आरोपी अब्दुल मलिक की जमानत अर्जी पर सुनवाई उच्च न्यायालय की खंडपीठ (डबल बेंच) करेगी। एकलपीठ ने सोमवार को जमानत अर्जी को खारिज कर दिया है। आरोपी अब्दुल मलिक की ओर से सत्र न्यायालय के आदेश के खिलाफ उच्च न्यायालय में अपील दायर की गयी है। न्यायमूर्ति रवीन्द्र मैथानी की एकलपीठ में इस मामले में सुनवाई हुई। आरोपी की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता एवं कांग्रेस नेता सलमान खुर्शीद की ओर से पेश्वी की गयी, लेकिन जमानत पर सुनवाई से पहले सहायक सरकारी (एजीए) अधिवक्ता मनीषा सिंह राना की ओर से अपील की पोषणीयता (मेटेनेबिलिटी) पर सवाल उठाया दिया गया। उन्होंने कहा कि गैर कानूनी गतिविधियां (रोकथाम) अधिनियम (यूपीए) जैसे गंभीर मामलों में राष्ट्रीय जांच अधिनियम (एनआईए एक्ट) के तहत शेषन कोर्ट को विशेष कोर्ट की शक्तियां प्राप्त हैं और शेषन कोर्ट के आदेश को उच्च न्यायालय की एकल पीठ के बजाय खंडपीठ में चुनौती दी जा सकती है। इसके उल्टे आरोपी की ओर से कहा गया कि एनआईए एक्ट के तहत यूपीए जैसे मामलों के लिये स्पेशल कोर्ट का प्रावधान है और शेषन कोर्ट स्पेशल कोर्ट नहीं है।

मणिपुर में गोलीबारी में महिला समेत दो की मौत, नौ घायल

इफाल। मणिपुर के घाटी इलाके में रविवार को संधिघ्न अग्रवादियों द्वारा की गई गोलीबारी में एक महिला समेत दो लोगों की मौत हो गई और एक पुलिस अधिकारी तथा मृतक महिला की नाबालिग बेटी समेत नौ अन्य घायल हो गए। सुरक्षाबलों ने आरोपियों की तलाश शुरू कर दी है। मणिपुर के पुलिस महानिदेशक राजीव सिंह ने बताया कि भारी हथियारों से लैस अग्रवादियों ने पहाड़ी की चोटी से अंधाधुंध गोलीबारी की और इफाल पश्चिम जिले के अंतर्गत कोत्रुक् और पड़ोसी कडोंगबंद के निचले घाटी इलाकों में बम भी फेंके। इस गोलीबारी में 31 वर्षीय महिला और एक ग्रामीण की मौत हो गई, जबकि महिला की आठ वर्षीय बेटी और एक पुलिस अधिकारी समेत नौ अन्य लोग घायल हो गए। अधिकारी ने बताया कि संधिघ्न अग्रवादियों के आचानक हमले से तनाव और दहशत फैल गई। इसके कारण महिलाओं, बच्चों और बुजुर्गों समेत कई ग्रामीण सुरक्षित स्थानों पर शरण लेने के लिए भाग गए। मारी गई मैटैई समुदाय की महिला की पहचान नागांगम सुखला देवी के रूप में हुई। उसके शव को पोस्टमार्टम के लिए सरकारी क्षेत्रीय आर्युर्विज्ञान संस्थान (आरआईएमएस) ले जाया गया।

वंदे भारत ट्रेन को बम से उड़ाने की धमकी, बिहार में सुरक्षा बढ़ाई गई

पटना। रेलवे सुरक्षा बल (आरपीएफ) ने वंदे भारत एक्सप्रेस को बम से उड़ाने की धमकी मिलने के बाद बिहार में सुरक्षा बढ़ाते हुए कई राज्यों के पुलिस महानिदेशक को पत्र लिखकर आगाह किया है। वंदे भारत को बम से उड़ाने की धमकी का संदेश एक कर्मचारी के मोबाइल फोन पर आया है। रेलवे सुरक्षा बल ने इस धमकी को गंभीरता से लिया है। खासतौर पर वंदे भारत एक्सप्रेस की निगरानी के पुख्ता इंतजाम किए हैं। किसी ने नार्दन फ्रंटियर रेलवे (असम) क्षेत्र में वंदे भारत को बम से उड़ाने की धमकी का मैसेज व्हाट्स ऐप पर एक रेलकर्मी के पास भेजा है। इस कर्मचारी ने तत्काल यह सूचना वरिष्ठ अफसरों को दी। इसके बाद हाजीपुर जोन आरपीएफ के आईजी ने बिहार, झारखंड, भोपाल और उत्तर प्रदेश के पुलिस महानिदेशक को पत्र भेजा है। इसमें धमकी के मद्देनजर सतर्कता बरतने का आदेश जारी किया गया है। रांची की विशेष शाखा ने भी झारखंड के सभी जिलों को पत्र भेजकर सतर्कता व सुरक्षा पर जोर दिया है।

बुलडोजर एक्शन पर सुप्रीम कोर्ट ने लगाई रोक, कहा दोषी हो तब भी किसी का घर नहीं गिरा सकते

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने देशभर में बुलडोजर कार्रवाई पर सवाल खड़ा किया है। जस्टिस बीआर गवाई की अध्यक्षता वाली बेंच ने कहा कि सिर्फ आरोपित होने के आधार पर किसी के खिलाफ ऐसी कार्रवाई नहीं हो सकती है। कोर्ट ने कहा कि इसे लेकर वो राष्ट्रीय स्तर पर दिशा-निर्देश जारी करेंगे। मामले की अगली सुनवाई 17 सितंबर को होगी। सुप्रीम कोर्ट ने उदयपुर में चाकू मारने के आरोपित बच्चे के पिता के घर पर बुलडोजर कार्रवाई पर कहा कि एक पिता का बेटा अंडित्व हो सकता है लेकिन उसके लिए उसका घर गिरा दिया जाए, यह तरीका सही नहीं है। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि किसी के दोषी साबित होने के बाद भी उसका घर नहीं गिराया जा सकता है। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि बुलडोजर कार्रवाई के संबंध में दिशा-निर्देश बनाए जाने की जरूरत है। कोर्ट ने राष्ट्रीय स्तर पर दिशा-निर्देश जारी करने के लिए सभी पक्षों से सुझाव मांगा।

गिग वर्कर्स के कल्याण के लिए एक व्यापक राष्ट्रीय कानून की जरूरत पर ‘आखिरकार जाग’ गई सरकार : कांग्रेस

नई दिल्ली। 'गिग वर्कर्स' को सामाजिक सुरक्षा का लाभ देने के लिए सरकार की ओर से प्रतिबद्धता जताए जाने के एक दिन बाद कांग्रेस ने सोमवार को केंद्र पर निशाना साधते हुए कहा कि वह ऐसे श्रमिकों के कल्याण के लिए एक व्यापक राष्ट्रीय कानून की आवश्यकता के प्रति 'अंततः जाग' गया है। प्रमुख विपक्षी पार्टी ने यह भी कहा कि भले ही इस जरूरी मुद्दे पर सरकार ने उसकी नीति से उधार लिया हो लेकिन वह इस रुख का स्वागत करती है। कांग्रेस की यह टिप्पणी श्रम मंत्री मनसुख मांडविया के उस बयान के बाद आई है जिसमें उन्होंने कहा था कि सरकार सक्रिय रूप से विभिन्न रास्ते तलाश रही है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि गिग और प्लेटफॉर्म श्रमिक सामाजिक सुरक्षा के दायरे में आए। 'गिग वर्कर्स' उन श्रमिकों को कहा जाता है जिनका काम अस्थायी होता है। कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने कहा कि सरकार गिग वर्कर्स के कल्याण के लिए एक व्यापक राष्ट्रीय कानून की जरूरत के प्रति 'आखिरकार जाग' गई है।

स्वाध्याय के विकास का हो प्रयास : आचार्यश्री महाश्रमण पर्वाधिराज पर्युषण : दूसरा दिन स्वाध्याय दिवस के रूप में हुआ समायोजित

वेसू, सूरत (गुजरात)।

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के वर्तमान अनुशास्ता, भगवान महावीर के प्रतिनिधि, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी की पावन सन्निधि में पर्वाधिराज पर्युषण प्रारम्भ हो चुका है। आत्मा के कल्याण का यह महापर्व अपनी पूर्ण भव्यता के साथ मनाया जा रहा है। हजारों की संख्या में श्रद्धालु अपने आराध्य की मंगल सन्निधि में पहुंच गए हैं और पूरे दिन और रात तक इस सुअवसर का लाभ उठा रहे हैं। चारों ओर मानों आध्यात्मिकता की रश्मियां प्रस्फुरित नजर आ रही हैं। लोगों को आध्यात्मिक लाभ प्रदान करने की महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी की अनुज्ञा से साधु-साधवियां भी पूर्ण जागरूकता के साथ जुटे हुए हैं। प्रातःकाल अर्हत् वंदना आदि के उपरान्त महावीर समवसरण में जनता जहां प्रेक्षाध्यान से क्रम से जुटी हुई



दिखाई दे रही है तो उसके उपरान्त पच्चीस बोल के तात्त्विक विश्लेषण का श्रवण कर अपने जीवन में आध्यात्मिक ज्ञान की वृद्धि का प्रयास भी दिखाई देता है। आगम की वाणी का श्रवण और तदुपरान्त आचार्यश्री की मंगलवाणी से पूर्व साध्वीप्रमुखजी, मुख्य मुनिश्री, साध्वीवर्याजी तथा अन्य चारित्रात्माओं द्वारा अनेक विषयों पर आधारित व्याख्या अथवा गीत आदि

के श्रवण का लाभ प्राप्त हो रहा है। इतना ही नहीं श्रद्धालुओं को दोपहर में भी चारित्रात्माओं के व्याख्यान का लाभ, फिर पुनः आचार्यश्री के प्रवास कक्ष में आगम वाचन के श्रवण को चारित्रात्माओं के साथ जनता भी उमड़ रही है। यह आध्यात्मिक क्रम देर रात तक चल रहा है। पर्युषण महापर्व के दूसरे दिन सोमवार को महावीर समवसरण के मुख्य मंगल तदुपरान्त साध्वीप्रमुखा



मंगलवाणी से पूर्व तीर्थ और तीर्थंकर विषय पर मुनि सिद्धकुमारजी ने अपनी विचाराभिव्यक्ति दी। साध्वीवर्या सम्बुद्धयशाली ने क्षांति-मुक्ति धर्म पर आधारित गीत का संगान किया। मुख्यमुनिश्री महावीरकुमारजी ने क्षांति-मुक्ति धर्म को विवेचित किया। साध्वी प्रीतिप्रभाजी ने स्वाध्याय दिवस पर आधारित गीत का संगान किया। तदुपरान्त साध्वीप्रमुखा

विश्रुतविभाजी ने स्वाध्याय दिवस के संदर्भ में उपस्थित जनता को पावन प्रतिबोध प्रदान किया। अहिंसा यात्रा प्रणेता आचार्यश्री महाश्रमणजी ने पर्युषण महापर्व के दूसरे दिन सोमवार को महावीर समवसरण व उसके आसपास उपस्थित विशाल जनमैदिनी को 'भगवान महावीर की अध्यात्म यात्रा' के प्रसंग का प्रारम्भ करते हुए कहा कि जम्बूद्वीप के पश्चिम विदेह में स्थित एक नगरी

जयंती के राजा शत्रुमर्दन का वर्णन करते हुए भगवान महावीर के वर्णित पूर्व के वर्णित 27 भवों की व्याख्या क्रम को प्रारम्भ किया। आचार्यश्री ने भगवान महावीर की नयसरार में स्थित आत्मा के विषय में प्रेरणा प्रदान की। तत्पश्चात आचार्यश्री स्वाध्याय दिवस पर उपस्थित विशाल जनमैदिनी को पावन पाथेय प्रदान करते हुए कहा कि ज्ञान से आदमी पदार्थों को जानता है। ज्ञान के विकास के लिए स्वाध्याय सहयोगी बन सकता है। ज्ञान दो प्रकार का हो सकता है-एक ज्ञान भीतर से उठता है और दूसरा पुस्तकों अथवा दूसरों से सुनकर प्राप्त होता है। भीतर से उठने वाला ज्ञान मानों कुएं के पानी के समान है तो दूसरों से अथवा पुस्तकों से प्राप्त ज्ञान कुण्ड के समान है। जितना उसमें डाला गया है, बस उतना ही प्राप्त किया जा सकता है। स्वाध्याय के द्वारा बाहर से लिया जाने वाला ज्ञान संगृहीत हो सकता है।

संस्कृति व संस्कारों को मजबूत कर उत्कृष्ट जीवन जीना सीखो : युवाचार्य महेंद्र ऋषि

चेनेई। पर्वाधिराज पर्युषण महापर्व के द्वितीय दिवस सोमवार को एएमकेएम के आनन्द दखार मे श्रमण संघीय युवाचार्य महेंद्र ऋषि जी महाराज ने पर्युषण पर्व में धर्म आराधना ओर साधना करने वाले साधक साधिकाओं को धर्मसभा मे धर्मउपदेश प्रदान करते हुए कहा कि तीन प्रकार के कमल होते हैं- हस्त कमल, मुख कमल और हृदय कमल। जिसके हस्त कमल में दान का अमृत है, उसकी कर्मनिर्जग होती है और उसको मन की शांति सहज ही मिलती है। उन्होंने कहा देने की प्रवृत्ति दो महत्वपूर्ण काम करती है पहला आपने जिसको दिया, उसको सहयोग हो गया और दूसरा परिग्रह संज्ञा कम हुई। लोभ व परिग्रह संज्ञा का हमारे जीवन पर अत्यधिक प्रभाव है। उन्होंने कहा जिसके मुख में सत्य का अमृत है, वाणी में विशिष्ट प्रकार का प्रभाव है, वह किसी परिस्थिति में झूठ



बोलेगा ही नहीं। जिसके मुख से सत्य वाणी निकलती है, वह अमृत तुल्य है। सत्य हमेशा शांति प्रदान करने वाला है। अगर आपने झूठ बोला और फिर सत्य का पता चल गया तो अनर्थ होगा। असत्य अविश्वास का गत्या और दूसरा परिग्रह संज्ञा कम हुई। लोभ व परिग्रह संज्ञा का हमारे जीवन पर अत्यधिक प्रभाव है। उन्होंने कहा जिसके मुख में सत्य का अमृत है, वाणी में विशिष्ट प्रकार का प्रभाव है, वह किसी परिस्थिति में झूठ

रूपी कमल में दया का संकल्प है, वह तीनों लोक में पूजनीय है। उन्होंने पंचतारा होटलों में विवाह न करने की प्रेरणा देते हुए कहा कि जहां प्राणी हिंसा, पंचेंद्रिय जीवों की हिंसा होती है, हमें वहां जाना ही नहीं चाहिए। जिस दुकान में मांसाहार वस्तुएं बिकती है, वहां खरीदी करनी ही नहीं चाहिए। यदि हम एक संकल्प कर लेते हैं तो बहुत से जीवों को अभयदान मिलता है। जीवन को सुंदर बनाने के लिए प्रेरित करते हुए

युवाचार्यश्री ने कहा कि जीवन में हमारा संकल्प होना ही चाहिए। पर्युषण पर्व के इस अवसर को गंवाना नहीं है। जिस कार्य में नकारात्मक तत्व घुस जाते हैं, जो परिवार के संस्कारों, धर्म की संस्कृति को नष्ट-भ्रष्ट करते हैं, उसे छोड़ने का संकल्प लो। किसी के भुलावे में मत आओ। हमारी संस्कृति, हमारे संस्कारों को मजबूत करने वाले सकारात्मक तत्वों को अपनाकर उत्कृष्ट जीवन जीना सीखो। उन्होंने कहा भावों की उत्कृष्टता बहुत महत्वपूर्ण है। आपके भीतर भावों का नहीं जगना अंतराय है। सबको सब चीजें उपलब्ध है लेकिन जिसका पुण्य प्रभाव है, उसे ही मिलता है। आपके भीतर रहे हुए उत्कृष्ट भाव आपके कर्मों की निर्जग करने में सहायक होते हैं। अनजान भावों से किया हुआ कर्म अंतराय नहीं होता है- उन्होंने कहा पर्युषण महापर्व आपकी झोली भरने आया है।

दिवाली के बाद सिर्फ महायुति गठबंधन ही पटाखे जलाएगा : एकनाथ शिंदे

ठाणे (महाराष्ट्र)/एजेंसी।

महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने आगामी राज्य विधानसभा चुनाव में जीत का दावा करते हुए कहा कि दिवाली के बाद सिर्फ महायुति गठबंधन ही पटाखे जलाएगा। अपने गृह नगर ठाणे में रविवार देर रात को एक जनसभा को संबोधित करते हुए शिंदे ने अपने गुरु आनंद दीधे और शिवसेना संस्थापक बाल ठाकरे को विनम्र श्रद्धांजलि दी। उन्होंने जोर देकर कहा कि उनके नेतृत्व वाली शिवसेना दीधे और ठाकरे की सीख और सिद्धांतों का पालन करती रहेगी। शिंदे ने वहां मौजूद दर्शकों से पुछ, "क्या आप महायुति सरकार द्वारा शुरू की गई सारी योजनाओं और कार्यक्रमों को जारी रखना चाहते हैं?" इस पर लोगों ने हां में जवाब दिया। आगामी महाराष्ट्र विधानसभा



चुनाव में शिवसेना, भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) और उप मुख्यमंत्री अजित पवार के नेतृत्व वाली राष्ट्वादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) नीत सत्तारूढ़ 'महायुति' या महागठबंधन की उद्भव ठाकरे के नेतृत्व वाली शिवसेना (यूबीटी), शरद पवार के नेतृत्व वाली राकांपा (एसपी) और कांग्रेस के महाराष्ट्र विकास आघाडी गठबंधन के साथ कटे का मुकाबला होने की संभावना है। राज्य में

अक्टूबर-नवंबर में चुनाव होने वाले हैं। राजनीतिक प्रतिद्वंद्वियों का जिक्र करते हुए शिंदे ने कहा, "उन्हें गलियों या दिल्ली जाने दीजिए। उन्हें महत्व मत दीजिए। हम अपना काम जारी रखेंगे।" उन्होंने हालिया लोकसभा चुनाव में ठाणे सीट से शिवसेना नेता नरेश म्हास्के को उतारने के अपने फैसले का जिक्र करते हुए कहा कि इस कदम का कुछ लोगो ने विरोध किया लेकिन म्हास्के ने इस सीट से जीत दर्ज की। अपने विरोधियों पर कटाक्ष करते हुए शिंदे ने दावा किया कि उनके विरोधी लगातार उन्हीं पर ध्यान केंद्रित किए हुए हैं। उन्होंने कहा, "जिस तरह से राजाराम प्रथम के शासनकाल के दौरान मुगल सेनाओं का मुकाबला करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका के लिए महमूद सांताजी और धनंजीजी उनके दुश्मनों ने पानी में हर जगह दिखाई देते थे।

उच्चतम न्यायालय ने छात्र नेता सायन लाहिड़ी की जमानत के खिलाफ बंगाल सरकार की याचिका खारिज की

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने सोमवार को पश्चिम बंगाल सरकार की उस याचिका को खारिज कर दिया, जिसमें एक महिला डॉक्टर के साथ बलात्कार और हत्या की घटना के विरोध में 27 अगस्त को राज्य सचिवालय तक निकाले गए मार्च के आयोजकों में से एक सायन लाहिड़ी को जमानत देने के कलकत्ता उच्च न्यायालय के आदेश को चुनौती दी गई थी। न्यायमूर्ति जे बी पारदीवाला और न्यायमूर्ति मनोज मिश्रा की पीठ ने कहा कि यह 'प्रथम दृष्ट्या' जमानत का मामला बनता है। कलकत्ता उच्च न्यायालय ने शुक्रवार को पश्चिम बंग छात्र समाज के नेता सायन लाहिड़ी को जमानत दे दी थी। पश्चिम बंग छात्र समाज एक अपंजीकृत छात्र समूह है। पश्चिम बंग छात्र समाज सहित दो संघठनों ने 27 अगस्त को राज्य सचिवालय तक मार्च का आह्वान किया था। रैली का

नेतृत्व करने में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए लाहिड़ी को 27 अगस्त की शाम गिरफ्तार किया गया था। पुलिस का कहना था कि रैली हिंसक रहे गई, जिससे सार्वजनिक और निजी संपत्ति को नुकसान पहुंचा और पुलिस अधिकारियों पर हमले किए गए। लाहिड़ी की मां अंजलि की याचिका पर कार्रवाई करते हुए कलकत्ता उच्च न्यायालय ने शुक्रवार को आदेश दिया था कि उन्हें शनिवार दोपहर दो बजे तक पुलिस हिरासत से रिहा कर दिया जाए। कोलकाता पुलिस ने शनिवार को लाहिड़ी को अपनी हिरासत से रिहा कर दिया। कोलकाता के आर जी केंड्रिकल कॉलेज तथा अस्पताल के संगोष्ठी कक्ष में नौ अगस्त को महिला चिकित्सक का शव बरामद किया गया था और चिकित्सक के साथ कथित दुकर्म की जांच के सिलसिले में एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया गया था।

सेबी प्रमुख के खिलाफ कांग्रेस के नए आरोप, पीएम से उनकी नियुक्ति पर मांगा स्पष्टीकरण

नई दिल्ली। कांग्रेस ने भारतीय प्रतिभूति एवं विनियम बोर्ड (सेबी) की अध्यक्ष माधवी बुच के खिलाफ हितों के टकराव के नए आरोप लगाते हुए सोमवार को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से उनकी नियुक्ति के मामले में मंत्रिमंडल की नियुक्ति समिति (एसीसी) के प्रमुख के रूप में स्पष्टीकरण देने की मांग की। कांग्रेस ने एक संवाददाता सम्मेलन में आरोप लगाया कि 2017 में सेबी की मौजूदा अध्यक्ष के पदभार संभालने के बाद से वह न केवल सेबी से वेतन ले रही हैं बल्कि आईसीआईसीआई बैंक में लाभ के पद पर भी हैं और वहां से भी आज की तारीख में आय हासिल कर रही हैं। कांग्रेस के प्रभारी महासचिव जयराम रमेश ने कहा कि अदाणी समूह द्वारा प्रतिभूति कानूनों के उल्लंघन की नियामक संस्था की उच्चतम न्यायालय की जांच में सेबी अध्यक्ष के हितों के टकराव को लेकर गंभीर सवाल उठाए गए हैं। उन्होंने ‘एक्स’ पर एक पोस्ट में कहा, “ऐसा लगता है कि इन सवालों को भारत सरकार ने यूं ही नजरअंदाज कर दिया है। उन्होंने कहा, “नॉन बायोलॉजिकल प्रधानमंत्री, जो अपनी चुप्पी के माध्यम से सेबी अध्यक्ष को बचाने में लगे हैं, को स्पष्ट रूप से सामने आकर निम्न सवालों का जवाब देना चाहिए।

दिल्ली के नए चीफ सेक्रेटरी का पदभार ग्रहण के बाद छुट्टी पर गए आईएएस धर्मेन्द्र

नई दिल्ली। दिल्ली के नए मुख्य सचिव धर्मेन्द्र ने रविवार यानी 1 सितंबर को पदभार ग्रहण किया था। इसके बाद अब वह 2 सितंबर से 3 दिन की छुट्टी पर चले गए हैं। दिल्ली के कार्यावाहक चीफ सेक्रेटरी के तौर पर यह जिम्मेदारी एडिशनल चीफ सेक्रेटरी मनीष कुमार गुप्ता को दी गई है। कार्यावाहक मुख्य सचिव मनीष कुमार गुप्ता एजीएमयूटी केडर के 1991 बैच के सीनियर आईएएस अधिकारी हैं। वह फिलहाल दिल्ली सरकार में एडिशनल चीफ सेक्रेटरी हैं। उनके पास शहरी विकास विभाग, गृह विभाग और इंड्यूसिब समेत कई अहम विभागों की जिम्मेदारी है। बता दें, नए चीफ सेक्रेटरी की दौड़ में मनीष कुमार गुप्ता का नाम भी शामिल था। निवर्तमान चीफ सेक्रेटरी नरेश कुमार का कार्यकाल 31 अगस्त को समाप्त हो गया था। केंद्रीय गृह मंत्रालय की तरफ से 1989 बैच के सीनियर आईएएस अधिकारी और अरुणाचल प्रदेश के सीएएस आईएएस धर्मेन्द्र को दिल्ली की जिम्मेदारी देने संबंधी आदेश जारी किया गया था। इन आदेशों के बाद चीफ सेक्रेटरी धर्मेन्द्र ने रविवार को औपचारिक तौर पर अपना पदभार ग्रहण कर लिया था।

न्यायालय ने प्रदर्शनकारी किसानों की शिकायतों के सौहार्दपूर्ण निवारण के लिए समिति गठित की

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने शंभू सीमा पर प्रदर्शन कर रहे किसानों की शिकायतों के सौहार्दपूर्ण निवारण के लिए पंजाब और हरियाणा उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश न्यायमूर्ति नवाब सिंह की अध्यक्षता में सोमवार को एक समिति का गठन किया। न्यायमूर्ति सूर्यकांत और न्यायमूर्ति उज्जल भुइयां की पीठ ने समिति को निर्देश दिया कि एक सप्ताह के अंदर वह अपनी पहली बैठक बुलाएं। शीर्ष अदालत ने कहा कि किसानों के मुद्दों का राजनीतिकरण नहीं होना चाहिए और समिति को उन पर चरणबद्ध तरीके से विचार करना चाहिए। उच्चतम न्यायालय ने कहा कि किसानों को उनका शांतिपूर्ण आंदोलन वैकल्पिक स्थानों पर ले जाने की आजादी होगी। अदालत हरियाणा उच्च न्यायालय के एक आदेश को चुनौती देने वाली हरियाणा सरकार की याचिका पर सुनवाई कर रही थी। आदेश में सरकार से अंबाला के पास शंभू सीमा पर लगाए गए अवरोधकों को एक सप्ताह में हटाने को कहा गया था जहां प्रदर्शनकारी किसानों ने 13 फरवरी से डेरा डाल रखा है।

आईआईटी-मद्रास में मंगलवार से शुरू होगा थर्मल विश्लेषण पर वैश्विक सम्मेलन

नई दिल्ली। दुनिया भर के 400 से अधिक वैज्ञानिक एक सप्ताह तक चलने वाले सम्मेलन के लिए चेन्नई में इकट्ठा हुए हैं। ये वैज्ञानिक अध्ययन कर रहे हैं कि अंतरिक्ष यान के पुर्जें हों या खाद्य पदार्थ सामग्री, जब तापमान में बदलाव होता है तो इनमें किस तरह के बदलाव देखने को मिलते हैं। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) मद्रास द्वारा इंटरनेशनल कंफेंडेशन फॉर थर्मल एनालिसिस एंड कैलोरिमेट्री, इंडियन थर्मोडायनामिक्स सोसाइटी अमृतपुर, इंडियन फैमिकल सोसाइटी कोलकाता और इंडियन कार्बिसिस्ट ऑफ कैमिस्ट आगरा के सहयोग से अपने परिसर में ‘द इंटरनेशनल कांग्रेस ऑन थर्मल एनालिसिस एंड कैलोरिमेट्री’ (आईसीटीएसी)का आयोजन किया जा रहा है। ‘इंडियन कार्बिसिस्ट ऑफ कैमिस्ट’ एवं ‘नेशनल ऑर्गेनाइजेशन कमेटी’ के अध्यक्ष रंजीत वोगा ने कहा, “यह सम्मेलन हमेशा यूरोप और अमेरिका में आयोजित किया जाता रहा है। पहली बार इसका आयोजन भारत में किया जा रहा है।” उन्होंने कहा, “किसी भी उत्पाद को उपयोग के लिए उतारने से पहले उसके थर्मल विश्लेषण के प्रभाव को देखना आवश्यक है।

प्रवासी श्रमिकों के लिए कल्याणकारी उपायों पर अमल के बारे में जानकारी दे केंद्र : न्यायालय

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने सोमवार को केंद्र सरकार से प्रवासी श्रमिकों के लिए कल्याणकारी उपायों के संबंध में अपने 2021 के फैसले और उन्हें राशन कार्ड व अन्य कल्याणकारी सुविधाएं प्रदान करने से जुड़े बाद के दिशा-निर्देशों के अनुपालन के बारे में विवरण देते हुए एक हलफनामा दाखिल करने को कहा। शीर्ष अदालत ने 29 जून 2011 के अपने फैसले और उसके बाद के आदेशों में प्राधिकारियों के लिए कई दिशा-निर्देश जारी किए थे, जिनमें उनसे ‘ई-श्रम’ पोर्टल पर पंजीकृत और कोविड-19 महामारी के दौरान मुश्किलों का सामना करने वाले सभी प्रवासी श्रमिकों को राशन कार्ड देने सहित अन्य कल्याणकारी उपाय करने को कहा गया था। ‘ई-श्रम’ केंद्रीय श्रम एवं रोजगार मंत्रालय की ओर से शुरू किया गया असंगठित श्रमिकों का एक व्यापक राष्ट्रीय डेटाबेस (एनडीडब्ल्यू) है, जिसका प्राथमिक उद्देश्य देशभर में असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों को कल्याणकारी योजनाओं और सामाजिक सुरक्षा उपायों का लाभ पहुंचाने की सुविधा प्रदान करना है। न्यायमूर्ति सीटी रवि कुमार और न्यायमूर्ति संजय करोल की पीठ ने कहा, भारत संघ को 29 जून, 2021 के फैसले और उसके बाद के अन्य आदेशों के अनुपालन में उठाए गए कदमों के बारे में जानकारी देते हुए एक व्यापक हलफनामा दाखिल करने का निर्देश दिया जाता है।

दिल्ली में बारिश के बाद महरौली बदरपुर रोड का बुरा हाल, आर्मी कैंप में घुसा पानी

नई दिल्ली। दिल्ली में सोमवार से मानसून फिर से एक्टिव हो गया है। राजधानी के कई इलाकों में झमाझम बारिश हुई। बारिश और हवाओं के असर से सुबह से ही दिल्ली का मौसम सुहावा बना हुआ है। वहीं, बारिश के बाद कई जगहों पर जलजमाव की समस्या उत्पन्न हो गई। इसके चलते महरौली-बदरपुर रोड पर ट्रैफिक व्यवस्था बुरी तरह प्रभावित हो गई। वहीं, मेहरौली बदरपुर रोड पर स्थित एशियन मार्केट आर्मी कैंप में बारिश का पानी घुस गया। महरौली बदरपुर रोड दक्षिणी दिल्ली की मुख्य सड़क है। जहां से हजारों लोग आते-जाते हैं। महरौली बदरपुर रोड पर लगभग 2 से 4 फीट पानी भर गया। इसके बाद कई गाड़ियां इस सड़क पर खराब हो गईं और लंबा जाम लग गया। जो लोग पब्लिक ट्रांसपोर्ट का इस्तेमाल करते हैं, उनके लिए सबसे बड़ी आफत हो गई ट्रैफिक जाम। कई लोग ऑफिस जाने के लिए बस, ऑटो के लिए इंतजार करते दिखे। कई लोग तो वापस अपने घर के लिए रवाना हो गए। जलजमाव से राहगीर पेशान: राहगीर दीपक शर्मा ने बताया, मैं पैदल आ रहा हूं क्योंकि इस सड़क पर भारी जल भराव हो गया है। कमर तक पानी है। कई गाड़ी पानी में खराब हो गई है।

हरियाणा विधानसभा चुनाव से पहले जेजेपी को बड़ा झटका, भाजपा में शामिल हुए हरियाणा के कई नेता

नई दिल्ली/एजेंसी।

हरियाणा में होने वाले आगामी विधानसभा चुनाव से पहले दुर्घत चौटाला की पार्टी जेजेपी को बड़ा झटका लगा है। जेजेपी के दो बड़े नेता देवेंद्र सिंह बबली (जो मंत्री भी रहे हैं) और संजय कबलाना ने सोमवार को भाजपा का दामन थाम लिया। इसके साथ ही जेल अधीक्षक के पद से वीआरएस लेने वाले सुनील सांगवान ने भी सोमवार को भाजपा की सदस्यता ग्रहण की। सुनील सांगवान के पिता सतपाल सांगवान हरियाणा की राजनीति के दिग्गज नेता रहे हैं और राज्य में मंत्री भी रह चुके हैं। भाजपा राष्ट्रीय महासचिव अरुण सिंह, हरियाणा के प्रदेश चुनाव सह-प्रभारी एवं त्रिपुरा के पूर्व मुख्यमंत्री बिप्लब कुमार देव और हरियाणा भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष मोहन लाल बड़ेली ने भाजपा मुख्यालय में इन तीनों नेताओं को पार्टी की सदस्यता दिलाई। इस मौके पर ओम प्रकाश धनखड़ भी मौजूद रहे। भाजपा के

बेंगलुरु की पत्रकार को मारी पड़ा सोनिया-राहुल के खिलाफ फर्जी खबर फैलाना, एफआईआर दर्ज बेंगलुरु/एजेंसी।

बेंगलुरु पुलिस ने कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं राहुल गांधी और सोनिया गांधी के बारे में गलत सूचना प्रसारित करने के आरोप में बांलादेशी पत्रकार सलाह उद्दीन शोएब चौधरी और एक भारतीय समाचार पोर्टल के एक कर्मचारी के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की है। कर्नाटक प्रदेश कांग्रेस कमेटी के सदस्य श्रीनिवास जी की शिकायत के बाद हाई ग्रांड्स पुलिस स्टेशन में मामला दर्ज किया गया था। शिकायत में आरोप लगाया गया है कि चौधरी ने अपने एक्स अकाउंट पर एक पोस्ट साझा किया था, जिसमें सोनिया गांधी को एक विदेशी जासूसी एजेंसी से गलत तरीके से जोड़ा गया था। बाद में इस पोस्ट को पोर्टल की एक कर्मचारी अर्दिति द्वारा समाचार पोर्टल के सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर साझा किया गया। श्रीनिवास जी ने दावा किया कि इस पोस्ट का

न्याय संहिता (बीएनएस) की धाराओं के तहत दर्ज की गई थी, जिसमें धारा 196 भी शामिल है, जो धार्मिक या अन्य आधार पर विभिन्न समूहों के बीच दुश्मनी को बढ़ावा देने से संबंधित है, और धारा 353 (2), जो संबंधित है। धार्मिक घृणा पैदा करने के इरादे से गलत जानकारी का प्रकाशन। इस बीच, पुलिस ने कहा, मामले की जांच फिलहाल जारी है।



किया जा रहा है। कुछ अच्छे पायलट प्रोजेक्ट शुरू किए गए हैं और हमें सफलता मिली है। उस आधार पर कुल 2,817 करोड़ रुपये के निवेश से डिजिटल कृषि मिशन की स्थापना की जायेगी। उन्होंने बताया कि दूसरा फैसला खाद्य एवं पोषण सुरक्षा से जुड़ा है। हम अपने किसानों, अपने कृषि समुदाय को 2047 के लिए डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर की संरचना की तर्ज पर विकसित

दिल्ली के पुष्प विहार में कैब पर गिरा पेड़

नई दिल्ली। दिल्ली के कई इलाकों में आज तेज हवाओं के साथ जमकर बारिश हुई। तेज हवाओं के चलते दक्षिण दिल्ली के पुष्प विहार में एक भारी पेड़ कैब के ऊपर गिर गया। यह हादसा उस वक्त हुआ जब कैब ड्राइवर अपनी सवारी को छोड़कर साकेत कोर्ट की तरफ जा रहा था। इसी बीच अचानक उसकी गाड़ी के ऊपर पेड़ गिर गया। हालांकि, गनीमत रही कि उस वककैब में कोई सवारी नहीं थी। ड्राइवर को भी कोई चोट नहीं आई। इस पेड़ की चपेट में पास खड़ी एक अन्य गाड़ी भी आ गई। इस घटना की जानकारी कैब ड्राइवर ने दिल्ली पुलिस को दी। इसके बाद मौके पर फायर की टीम और दिल्ली पुलिस के अलावा कई अन्य टीम भी पहुंची। सड़क पर जाम के हालात न बने, इसके लिए ट्रैफिक पुलिसकर्मी भी मौके पर पहुंची। पेड़ को कटर मशीन की मदद से काटकर सड़क से हटाय़ा गया।

प्रधानमंत्री मोदी के मार्गदर्शन में हरियाणा में बड़ी जीत हासिल करेंगे : बिप्लब देब

त्रिपुरा के पूर्व सीएम एवं हरियाणा विधानसभा चुनाव के सह प्रभारी बिप्लब कुमार देब ने कहा जिस दिव्यास के साथ देवेंद्र बबली, सुनील सांगवान और संजय कबलाना ने भाजपा की सदस्यता ग्रहण की है निश्चित ही आगामी चुनाव में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन में पूर्ण बहुमत के साथ विजयी होंगे। बिप्लब कुमार देब ने देवेन्द्र बबली, सुनील सांगवान और

सरकार बनाने को उत्सुक है। मुख्यमंत्री ने हाल ही में जनता के लिए किए गए 108 कामों की भी जानकारी दी थी। इसलिए प्रधानमंत्री मोदी की लोकप्रियता और भाजपा सरकार के कामकाज से प्रभावित भाजपा में शामिल हो रहे हैं।

हरियाणा में तीसरी बार भाजपा का सरकार बनना और कांग्रेस का सूपड़ा साफ होना तय है। जौंद में भी हाल ही में कई नेताओं और हजारों युवाओं ने भाजपा की सदस्यता ग्रहण

सत्ता प्राप्ति नहीं, मूल्यों-आदर्शों की स्थापना का माध्यम है राजनीति : सीएम योगी आदित्यनाथ

वाराणसी/एजेंसी।

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने राजनीति की व्याख्या करते हुये कहा कि राजनीति को सत्ता प्राप्ति का साधन नहीं बल्कि मूल्यों और आदर्शों की स्थापना का माध्यम समझा जाना चाहिये। सांस्कृतिक नगरी वाराणसी में रविवार को मुख्यमंत्री ने भारतीय जनता युवा मोर्चा की प्रदेश कार्य समिति की बैठक व सदस्यता कार्यशाला में युवाओं को राजनीति का ककहरा सिखाते हुए सिद्धांतों के अनुरूप मूल्यों व आदर्शों की स्थापना के लिए राजनीति को चुनने का आह्वान किया। उन्होंने साफ कहा कि राजनीति सत्ता प्राप्ति या स्वार्थ सिद्धि नहीं बल्कि प्रदेश हित व राष्ट्रहित के मूल्यों के संवर्धन का माध्यम बनना चाहिए। उन्होने युवाओं को सार्थक राजनीति का मंत्र



देते हुए अटल जी की सीख की ओर ध्यान आकृष्ट कराया। उन्होंने कहा, हमेशा एक बात याद रखें, सिद्धांत विहीन राजनीति मौत का फंदा होती है। हमें प्रलोभन में फंसना नहीं है और चाहे कुछ भी हो जाए अपने मूल्यों से समझौता नहीं करना है। योगी ने कहा, जब हमने युवाओं को रोजगार देने का कार्य किया तो आज परिणाम सबके सामने है। आज प्रदेश में युवाओं को उनके जनपद

कांग्रेस ने सेबी प्रमुख माधवी पुरी बुच से मांगा इस्तीफा

नई दिल्ली/एजेंसी।

कांग्रेस ने कहा है कि भारतीय प्रतिभूति एवं विनियम बोर्ड (सेबी) प्रमुख माधवी पुरी बुच पद पर रहते हुए आईसीआईसी बैंक से भी मोटा वेतन ले रही हैं और यह सेबी के नियमों का उल्लंघन है, इसलिए उन्हें तुरंत अपने पद से इस्तीफा देना चाहिए और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को इस बारे में देश को जवाब देना चाहिए। कांग्रेस संचार विभाग के प्रमुख पवन खेड़ा ने सोमवार को यहां पार्टी मुख्यालय में संवाददाता सम्मेलन में कहा कि सेबी प्रमुख ने नियमों का उल्लंघन किया है और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को जब सब कुछ मालूम था तो उन्हें बताना चाहिए कि श्रीमती बुच को उनके पद से हटया क्यों नहीं गया है। उन्होंने कहा, ंदेश में शतरंज का खेल चल रहा है। इसी शतरंज के खेल का एक मोहरा माधवी पुरी बुच हैं। श्रीमती बुच पांच अप्रैल



2017 से चार अक्टूबर 2021 तक सेबी में पूर्णकालिक सदस्य थीं। फिर दो मार्च 2022 को श्रीमती बुच सेबी की चेयरपर्सन बनीं। सेबी की चेयरपर्सन को नियुक्त करने वाली कैबिनेट में श्री मोदी और श्री अमित शाह है। श्रीमती बुच सेबी की पूर्णकालिक सदस्य होते हुए रेगुलर इनकम आईसीआईसीआई बैंक से ले रही थीं जो कि 16.80 करोड़ रुपए था। यहीं नहीं, वह आईसीआईसीआई पूडेंशियल, ईएसओपी और ईएसओपी का टीडीएस भी

आईसीआईसीआई बैंक से ले रही थीं। उन्होंने कहा, हम जानना चाहते हैं कि आप सेबी की पूर्णकालिक सदस्य होने के बाद भी अपना वेतन आईसीआईसीआई से क्यों ले रही थीं। यह सीधे-सीधे सेबी के सेक्शन-54 का उल्लंघन है इसलिए अगर श्रीमती बुच में थोड़ी भी शर्म होगी तो उन्हें अपने पद से इस्तीफा दे देना चाहिए। श्रीमती बुच मार्केट की रेगुलेटर हैं, सेबी की चेयरपर्सन हैं, तब भी आईसीआईसीआई बैंक से वेतन कैसे ले सकती हैं। साल 2017-2024 के बीच इन्होंने आईसीआईसीआई पूडेंशियल से 22,41,000 रुपए क्यों लिए।

आखिर वह आईसीआईसीआई को क्या सेवाएं दे रही थीं। प्रधानमंत्री मोदी से हमरा सवाल और उन्हें इसका जवाब देना चाहिए। प्रवक्ता ने प्रधानमंत्री से सवाल किया और कहा, प्रधानमंत्री आप जब रेगुलेटरी बॉडी के प्रमुखों की नियुक्ति करते

मुख्यमंत्री साय पोरा तिहार पर भगवान शिव और नंदीराज की कर रहे हैं पूजा

मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने पोरा तिहार पर भगवान शिव की विधि-विधान से पूजा-अर्चना कर छत्तीसगढ़ की सुख-समृद्धि और खुशहाली की कामना की। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय अपनी धर्मपत्नी श्रीमती कौशल्या देवी साय के साथ पोरा तिहार

तीजा की बधाई दी। उन्होंने कहा कि यह बहुत खुशहाली का अवसर है। मेरे बुलावे पर प्रदेश के सभी जिलों से बहनें यहां आई हैं, मैं और सभी का स्वागत करता हूं। तीजा में सुहागन महिलाएं निर्जला व्रत रखकर अपने पति की दीर्घायु जीवन की कामना लेकर शिव-पार्वती की पूजा करती हैं। मुख्यमंत्री

राष्ट्रीय

मालीवाल से मारपीट मामले बिभव कुमार को सुप्रीम कोर्ट से जमानत

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट से दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के पीए बिभव कुमार को बड़ी राहत मिली है। कोर्ट ने बिभव कुमार को खाति मालीवाल के साथ मारपीट के मामले में जमानत दे दी। जस्टिस सूर्यकांत की अध्यक्षता वाली बेंच ने जमानत पर रिहा करने का आदेश दिया। साथ ही जस्टिस सूर्यकांत और उज्जल भुइयां की पीठ ने निर्देश दिया कि बिभव को केजरीवाल के निजी सहायक के रूप में बहाल नहीं किया जाएगा या उन्हें मुख्यमंत्री कार्यालय में कोई आधिकारिक कार्यभार नहीं दिया जाएगा। वह सभी गवाहों की जांच होने तक मुख्यमंत्री के आवास में प्रवेश नहीं कर सकते। दिल्ली पुलिस ने किया विरोध: जमानत का दिल्ली पुलिस ने विरोध किया। दिल्ली पुलिस की तरफ से एएसजी एसवी राजू ने कहा कि अदालत को घटना पर ध्यान देना चाहिए। सीएम के आवास पर एक महिला सांसद से इस तरह से मारपीट की गई।

की भतीं होगी। यही नहीं आने वाले दो वर्षों में दो लाख नौजवानों को सरकारी नौकरी से जोड़ा जाएगा। आज प्रदेश में युवाओं के साथ कोई भेदभाव नहीं होता। युवाओं को निष्पक्ष एवं पारदर्शी तरीके से सरकारी नौकरी से जोड़ा जा रहा है। विगत साढ़े सात वर्ष में हमने साढ़े छह लाख से ज्यादा युवाओं को नौकरी दी है। योगी ने कहा कि आज सब बाबा विष्वक्नाथ की इस पावन धरा पर एक होकर कार्यशाला में सहभागी बन रहे हैं। आपका उत्साह नई ऊर्जा का वाहक बनता है। ये उम्र ही ऐसी है जहां ऊर्जा बनी है और प्रतिभा भी है। सार्वजनिक जीवन में राजनीति को हम लोग सत्ता प्राप्ति का माध्यम नहीं बल्कि मूल्यों व आदर्शों की स्थापना के लिए कार्य कर रहे हैं। अपने उद्देश्य से विचलित हुए बिना हम सब कार्य करते हैं और हम श्रेय लेने के लिए कार्य नहीं करते।